आज़ादी का अमृत महोत्सव

जलतरंग

मेक इन इंडिया

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

अंक 17वां

मार्च 2022



राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता



पनडुब्बी वेला की कमिशनिंग



उड़ीसा सरकार का कलिंगा संरक्षा पुरस्कार प्राप्त करते हुए एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम,एनएम, भानौ (नि) के साथ एमडीएल के अन्य अधिकारीगण

मार्च 2022

जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

संरक्षक

वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि)

मुख्य परामर्शदाता

डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादक मण्डल

श्री अरुण कुमार चान्द, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं कर्मचारी संबंध)
श्री श्रीनिवास सिन्हा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)
श्री पी डी सिद्दीकी, उप प्रबंधक (राजभाषा)
सुश्री जयंतिका मुखर्जी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
डॉ. सुमेध के हाडके, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मुद्रक

रेखा प्रिन्टर्स
7, गांवदेवी दर्शन, ब्रम्हदेव खोत मार्ग,
डॉकयार्ड रोड, माझगांव, मुंबई – 400010.

प्रकाशक

राजभाषा अनुभाग
माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड,
डॉकयार्ड रोड, मुंबई – 400010.
फोन – 22-23710456

मार्च 2022

विषय-सूची

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से 3

निदेशक (वित्त) का संदेश 4

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश .. 5

संपादकीय 6

पोत–निर्माण में एस.बी.–पाइप शॉप का योगदान 7
लाल साहब सिंह – मुख्य प्रबंधक (जनि–पाइप शॉप)

सामान्य अग्निशमन जानकारी 10
दिनेश कुमार – मुख्य प्रबंधक (अग्निशमन विभाग)

नियर मिस,निकट चूक,बाल बाल बचना 13
परेश महतो – मुख्य प्रबंधक (संरक्षा विभाग)

एमडीएल में एसएपी–ईआरपी कार्यान्वयन 17
संजय मिश्रा – मुख्य प्रबंधक (मानव संसाधन–समवाय)

चिट्ठी मेरे नाम की..... 21
प्रकाश चन्द्र झा – उप महाप्रबंधक (जनि–कार्य)

केंद्रीय सतर्कता आयोग और प्रतिबंधात्मक सतर्कता पर संक्षिप्त में जानकारी 22
विवेक मोरे – मुख्य प्रबंधक (सतर्कता)

विश्वभाषा के रूप में हिंदी 24
श्रीनिवास सिन्हा – अपर महाप्रबंधक (मासं एवं राभा)

आत्मनिर्भर भारत 28
पी.डी. सिद्दीकी – उप प्रबंधक (राजभाषा)

महिलाओं एवं बच्चों के प्रति साइबर अपराध निवारण 31
जयंतिका मुखर्जी – वरिष्ठ अनुवादक (राजभाषा)

ड्युटी 33
जगदीश पाणीग्राही – उप महाप्रबंधक (आरपीसी)

जब सोचने भर से चलेगा मोबाइल और कंप्यूटर 36
फ्रांसिस लोबो – कार्यालय अधिक्षक (एचआर एक्जीक्यूटिव)

सिंगापुर में हिंदुस्तानी झंडा 37
सनेही प्रसाद – इलेक्ट्रीशियन

हिंदी कविता 38
सुमन कुमार ठाकुर – निजी सहायक, सीएमडी

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की उपलब्धियाँ

कोविड के कारण मृत कर्मचारियों को आर्थिक सहायता 39

प्रथम विशाखापट्टनम श्रेणी विध्वंसक नौसेना को सुपुर्दगी 40

चौथी स्कॉर्पिन पनडुब्बी वेला की डिलीवरी 41

एमडीएल में सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2021.. 42

आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर एमडीएल की हेरिटेज गैलरी – धरोहर की प्रदर्शनी 43

पी15बी के दूसरे विध्वसंक पोत मोरमुगाओ का समुद्री परीक्षण 44

डिजिटल इंडिया की प्रमुख पहल 45

कामा एवं अल्बलेस अस्पताल में उच्च निर्भरता इकाई (एचडीयू) और एनआईसीयू की स्थापना 46

माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियाँ 47



अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से .....

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" का प्रकाशन हिंदी के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से किया जाता है। पत्रिका में उत्पाद संबंधी लेख कहानी, कविता और सरकारी योजनाएं एमडीएल कर्मचारियों द्वारा लिखे जाते हैं। यही इस पत्रिका की गुणवत्ता है। हमारा प्रयास रहता है कि पत्रिका में देश दुनिया एवं एमडीएल की नवीनतम जानकारी से अपने पाठकों को अवगत कराया जाए। अद्यतन सरकारी योजनाओं को भी इस पत्रिका में शामिल किया जाता है।

हिंदी, देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है और अब हिंदी अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई है। दुनिया में भी हिंदी का व्यापक प्रसार हो रहा है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग में काफी प्रगति हुई है। हिंदी हमारी देश की राजभाषा है इसलिए हिंदी का प्रयोग करने पर हमें अभिमान होना चाहिए।

'हिंदी' हमारे भारतीय संस्कृति की भाषा है। हिंदी भारत वर्ष की धार्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक को विश्व स्तर पर प्रगति करने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड भारतीय नौसेना के लिए युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता कंपनी है जिसका कार्य तकनीकी प्रकार का है। तकनीकी कार्यशैली होने के बावजूद भी कंपनी तीन पत्रिकाएं यानी जलतरंग, माझडॉक न्यूज एवं सुचारिता प्रकाशित करती है और इन सभी में हिंदी को उचित स्थान प्राप्त होता है। मैं,विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में उपस्थित सभी विभागप्रमुखों को राजभाषा के आदेशों–निर्देशों और वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का सुझाव देता हूँ।

मुझे आशा के साथ पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा पत्रिका ''जलतरंग'' का यह 17वां अंक अपने मकसद में जरुर कामयाब होगा।

नारायण।

वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, भानौ (नि)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



निदेशक (वित्त) का संदेश .....

हिन्दी हमारी सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक है। यह एक सरल, सुबोध एवं वैज्ञानिक भाषा है। राजभाषा पत्रिका को प्रकाशित करने के पीछे की मूल भावना हिन्दी भाषा में अधिकाधिक कार्य की सोच को विकसित करना है। पत्रिका के माध्यम से कर्मचारी राजभाषा से संबन्धित पहलूओं को पढ़कर हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित हो सकेंगे।

अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी निरंतर अपनी महत्ता सिद्ध करती जा रही है। विश्वभर में हिन्दी सीखने की जो गहरी अभिरुचि है उसका सांस्कृतिक कारण होने के साथ–साथ आर्थिक कारण भी है।

हिन्दी, संघ की राजभाषा के साथ–साथ संपर्क भाषा के रूप में निरंतर अपना प्रभाव बढ़ाती जा रही है। इसका उपयोग डिजिटल जगत में भी दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है। भारत का विशाल जनाधार हिन्दी भाषी होने से इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के युग में आज कंप्यूटर पर हर कार्य हिन्दी में करना संभव है। हम लगातार इस कोशिश में हैं कि कंपनी राजभाषा विभाग के दिशा–निर्देशों का पालन करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन में सदैव अग्रणी रहे। राजभाषा हिन्दी में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है, न केवल इसका उपयोग दैनिक संवाद में बल्कि सामान्य दैनिक कार्यालयीन कार्य एवं पत्राचार में भी करें। आप सभी से मेरा अनुरोध है कि अपने कार्यालय से भेजे जाने वाले ईमेल में हिन्दी का प्रयोग अधिक से अधिक करें ताकि हिन्दी भाषा के विस्तार में हम सफल हो सकें।

मैं इस 17वें अंक के संपादक मण्डल एवं प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि पत्रिका पाठकों के ज्ञान में वृद्धि करते हुए राजभाषा हिन्दी को हर क्षेत्र में शीर्ष स्थान पर ले जाने में मददगार होगी।

शुभकामनाओं सहित

संजीव सिंघल

श्री संजीव सिंघल
निदेशक (वित्त)



कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश ...

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की गृहपत्रिका ''जलतरंग'' के 17वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका माझगांव डॉक के अधिकारियों व कर्मचारियों के सृजनात्मक क्षमताओं का दर्पण है। पत्रिका सम्प्रेषण का माध्यम है जो न केवल विचारों का आदान–प्रदान करता है अपितु भावनाओं को भी ओतप्रेत करता है।

पत्रिका का 17वां अंक मुख्य रूप से कंपनी उत्पादों एवं कर्मचारियों के लेख पर आधारित है। भाषाई वर्गीकरण के आधार पर एमडीएल ''ख'' क्षेत्र में स्थित है। राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित सभी लक्ष्यों को एमडीएल कर्मचारियों के सामूहिक प्रयास एवं योगदान से हासिल करने में कामयाब हुआ है। हिन्दी का अधिकतम प्रचार–प्रसार करना पत्रिका का उद्देश्य है। राजभाषा का अपने दैनिक कार्यों में अधिक से अधिक प्रयोग करना प्रत्येक कर्मचारी की राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी है। एमडीएल राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने में सतत प्रगतिशील है।

हमारा संस्थान ग्राहकोन्मुखी संस्थान है जहां अधिकतम कार्य ग्राहकों की भाषा में करना पड़ता है। हमारे कार्य में उत्तरोत्तर प्रगति करने के लिए हमें राजभाषा में कार्य करते हुए अपने संवैधानिक दायित्व का भी निर्वाह करना होगा। हम अपने विस्तार और विकास के लिए हर तरह से प्रतिबद्ध और कटिबद्ध हैं। हमारा लक्ष्य ग्राहको की संतुष्टि के साथ देश का समग्र विकास करते हुए समुद्री सुरक्षा में सामरिक भूमिका निभाना है।

राजभाषा कार्यान्वयन की संवैधानिक जिम्मेदारी हम बखूबी निभाते आ रहें हैं और भविष्य में भी इस दिशा में निरंतर प्रयत्नशील रहेंगे। पत्रिका के प्रगति की मंगल कामनाओं के साथ–साथ पत्रिका के प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

संतोष कु मल्लिक

डॉ संतोष कुमार मल्लिक

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)



संपादकीय ....

विगत 250 वर्षों से माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने विभिन्न स्वामियों के अधीन विकास करते हुए तथा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक हालातों से जूझते हुए आज ''राष्ट्र के पोत निर्माता'' होने का गौरव प्राप्त किया है। एमडीएल की गृहपत्रिका ''जलतरंग'' को राष्ट्रीय स्तर के दो पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है एवं निरंतर 2014 से आज तक मुंबई टॉलिक के 56 पीएसयू में कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच में सफल प्रतियोगी के रूप में ''उत्कृष्ट गृहपत्रिका'' के सम्मान से सम्मानित किया जाता रहा है।

पत्रिका के प्रकाशन में जिन रचनाकारों को अपनी अभिव्यक्ति का अवसर मिल रहा है, मैं उन सबके प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ। हिन्दीतर भाषा–भाषी अधिकारियों/ कर्मचारियों में हिन्दी पढ़ने और हिन्दी के प्रति उनकी अभिरुचि बढ़ाने में सफल होगा तथा उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति और कार्यालयीन हिन्दी को और निखारेगा। आशा है कि ''जलतरंग'' पत्रिका का 17वां अंक विविधपूर्ण, रोचक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री से परिपूर्ण होगा।

जलतरंग का मूल उद्देश्य अपने संस्थान की उत्पादकता के बारे में लोगों को जानकारी देना और राजभाषा कार्यान्वयन की ज़िम्मेदारी का निर्वाह करना है। हमें नए आयाम में, नए कीर्तिमान प्राप्त करना है, अपनी उपलब्धियों एवं विशेष योगदान से सामान्य राजभाषा नीति के लक्ष्यानुसार कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी विशेष तौर पर प्रयासरत रहना होगा। राजभाषा देश की संस्कृति, सभ्यता, सार्वभौमिकता, बंधुत्व और संचार का माध्यम है। सभी के सहयोग से राजभाषा का निरंतर विकास हो रहा है।

पत्रिका के माध्यम से सभी से मेरी अपील है कि राजभाषा विभाग द्वारा निर्देशित लक्ष्यों को पूरा करने में अपना विशेष योगदान दें एवं प्रशासनिक कार्यों में राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

अरुण कु चान्द

श्री अरुण कुमार चान्द

महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं कर्मचारी संबंध)

पोत-निर्माण में एस.बी. पाइप शॉप का योगदान



लाल साहब सिंह
मुख्य प्रबंधक (जनि – पाइप शॉप)

मानव जीवन में पाइप का महत्व हम सभी जानते हैं। दुनिया में पाइप का इतिहास बहुत पुराना है। अभिलेखों से पता चलता है कि बीजिंग शहर के लिए प्रकाश प्रदान करने हेतु प्राकृतिक गैस को शहर तक पहुंचाने के लिए 2500 ईसा पूर्व में एक अल्पविकसित पाइप–लाइन का उपयोग किया गया था। ठोस पदार्थों को छोड़कर लगभग सभी पदार्थों का स्थानांतरण पाइप के माध्यम से ही किया जाता है। ऐसे में पाइप, पाइप–स्पूल और पाइपिंग–सिस्टम की चर्चा आवश्यक हो जाती है।

पाइप, पाइप-स्पूल और पाइपिंग-सिस्टम

साधारण भाषा में कहें तो धातु या प्लास्टिक की खोखली और बेलनाकार आकृति को पाइप कहते हैं जो सामान्यत: लगभग 6 मीटर की लम्बाई में बाजार में उपलब्ध हो जाता है। ड्राइंग के अनुसार पाइप को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर इन्हे फिटिंग्स के साथ आपस में जोड़कर पाइप–स्पूल का निर्माण होता है और तमाम पाइप–स्पूल को आपस में जोड़कर एक पाइपिंग–सिस्टम का निर्माण होता है जिसका उपयोग स्रोत से गंतव्य तक तरल पदार्थ रखने और ले जाने के लिए किया जाता है। एमडीएल में पोत के लिए पाइप–स्पूल का निर्माण एस.बी.–पाइप शॉप में होता है। एस.बी.–पाइप शॉप, एस.बी.–वर्क्स के अधीन एस.बी.–इंजीनियरिंग का एक हिस्सा है।

वर्गीकरण व निर्माण

पाइप–स्पूल का वर्गीकरण कई तरीके से किया जाता है– जैसे की मटेरियल के आधार पर, दबाव के आधार पर या फिर साइज़ के आधार पर इत्यादि।

मटेरियल के आधार पर : पाइप व फिटिंग्स को मटेरियल के आधार पर मुख्यत: दो भागो में बाँट सकते हैं :



1) फेरस– कार्बन स्टील व स्टेनलेस स्टील आदि

2) नॉन–फेरस– एल्युमिनियम, कॉपर, कॉपर–निकेल, गन–मेटल इत्यादि

दाब के आधार पर : दाब के आधार पर भी पाइप व फिटिंग्स को 2 भागों में बाँटा जा सकता है–

1) कम दबाव पाइप (20 बार दबाव तक)

2) उच्च दबाव पाइप (20 बार दबाव से अधिक)

साइज़ (बोर) के आधार पर : साइज़ के आधार पर भी पाइप व फिटिंग्स को 2 भागों में बाँटा जा सकता है–

1) छोटा बोर पाइप (25 एन.बी. तक)

2) बड़ा बोर पाइप (25 एन.बी. से अधिक)

निर्माण के दौरान पोत के आतंरिक विन्यास में संभावित परिवर्तन के मद्देनजर पाइप–स्पूल का निर्माण 3 अलग–अलग तरीकों से किया जाता है –फिनिश पाइप, सेमी–फिनिश पाइप और टू–प्लेस पाइप.

फिनिश पाइप : इन पाइप–स्पूल का फेब्रिकेशन ड्राइंग के

अनुसार होता है और तुरंत ही इन्हे वेल्डिंग, हैड्रोटेस्टिंग तथा क्लीनिंग/गैल्वनाइजिंग करके पोत पर भेज दिया जाता है।

सेमी-फिनिश पाइप : इन पाइप–स्पूल का फेब्रिकेशन ड्राइंग के अनुसार करके बिना वेल्डिंग किये पोत पर सेटिंग के लिए भेजा जाता है वहां से पुष्टि होने के बाद पाइप–स्पूल को वापस लाकर पाइप शॉप में वेल्डिंग, हैड्रोटेस्टिंग तथा क्लीनिंग/गैल्वनाइजिंग करके पोत पर भेज दिया जाता है।

टू-प्लेस पाइप: इन पाइप–स्पूल का फेब्रिकेशन पाइप शॉप में पोत द्वारा बनाये गए जिग/टेम्पलेट के अनुसार होता है और उसके बाद सभी प्रक्रिया फिनिश–पाइप के अनुसार चलती है। कभी–कभी पोत की टीम पाइप फेब्रिकेशन करके उसे फिनिश करने के लिए पाइप–शॉप में भेजती है।

बुनियादी सुविधाएँ एवं मुख्य मशीनें

113X31 मीटर क्षेत्र में स्थापित तथा 55 प्रमाणित एस.बी.–पाइप शॉप में पाईप–स्पूल के फेब्रिकेशन, झलाई, परीक्षण और सतह उपचार के लिए कई बुनियादी सुविधाएँ एवं मशीनें मौजुद हैं जिनकी सहायता से कुशल श्रमिकों द्वारा सभी पाइप–स्पूल को अंतिम रुप दिया जाता है। इनमें से कुछ सुविधाओं का संक्षिप्त उल्लेख आवश्यक हो जाता है। यहाँ पर 3 इलेक्ट्रिकली ओवरहेड ट्रेवल (EOT) क्रेन, 2 जिब क्रेन, 2 मोनोरेल क्रेन, हाइड्रोटेस्टिंग बे, केमिकल क्लीनींग बे इत्यादी मौजुद हैं। हाल ही में केमिकल क्लीनिंग बे को उन्नत करके पाइप–स्पूल की सफाई 100% बायोडिग्रेडेबल डिटर्जेंट से किया जाने लगा है। पाइप–शॉप में टार्च ब्रेजिंग (Tourch Brazing) परिरक्षित धातु चाप वेल्डिंग (SMAW) और गैस टंगस्टन आर्क वेल्डिंग (GTAW) प्रक्रिया में वेल्डिंग की सुविधा उपलब्ध है। गैल्वनाइजिंग सेड के अलावा कार्यशाला में निम्नलिखित बड़ी मशीनें उपलब्ध हैं–

1) **सी.एन.सी. फ्लान्जिंग मशीन** (Model: F-200): टी–ड्रिल (T-Drill), फ़िनलैंड द्वारा निर्मित यह आधुनिक मशीन जुलाई 2016 में स्थापित की गयी। इस मशीन की सहायता से पाइप के दोनों सिरों को फैलाकर (Flaring) कप जैसा आकार दे दिया जाता है जहां लूज फलांज डाल दिया जाता है जिससे पाइप में अलग से फ्लांज वेल्डिंग की जरुरत नहीं पड़ती है। ऐसे पाइप को जहाज में लगाते वक्त जरुरत के हिसाब से घुमा भी सकते हैं। अतः यह मशीन लागत कम करने में सहायक है।

2) **सी.एन.सी. पाइप बेन्डिंग मशीन** (Model-80HD): स्वार्ज–रोबिटेक (Schwarze-Robitec), जर्मनी द्वारा निर्मित यह मशीन दिसम्बर 2000 में स्थापित की गयी थी। इस मशीन की सहायता से 25-80 मिलीमीटर नोमिनल बोर की किसी भी मटेरियल की पाइप को बेन्डिंग कर सकते हैं। फ़िलहाल इस मशीन में वर्तमान में सिस्टम बूटिंग



की त्रुटि है और सॉफ्टवेयर अपग्रेडेशन प्रक्रिया के अधीन है।

3) **वर्टीकल बैंड-सॉ मशीन** (Model: VBM-400R): मल्टी–कट मशीन टूल्स (Multi-cut Machine Tools), द्वारा निर्मित यह बहुपयोगी मशीन सितम्बर 2017 में स्थापित की गयी। इस मशीन की सहायता से उचित ब्लेड साइज़ (TPI) का चयन करके 25-300 एन.बी. की सभी धातु की पाइप किसी भी एंगल में कटिंग कर सकते हैं।

4) **नेकिंग मशीन** (Model T-150): टी–ड्रिल (T-Drill), फिनलैंड द्वारा निर्मित यह मशीन 1985 में स्थापित की गयी। इस मशीन की सहायता से एल्युमीनियम, कॉपर, क्युप्रोनिकिल, कार्बन–स्टील, स्टेनलेस स्टील की किसी भी पाइप में छेद करके ब्रांचिंग कर सकते हैं।

5) **मेटल बैंड सॉ कटिंग मशीन** (Model-260DCA): एंडटूल्स (Endtools) लिमिटेड, इंदौर द्वारा निर्मित यह मशीन वर्ष 2007 में स्थापित की गयी। यह मशीन किसी





भी धातु की पाइप को काटने में सहायक है। किसी भी पोत में पाइपिंग–नेटवर्क जीवित शरीर में एक तंत्रिका–तंत्र की तरह कार्य करते हैं। उदाहरण के तौर पर, पोत में पीने योग्य पानी की आपूर्ति, कचरे की निकासी, सिस्टम की फ्लशिंग, इंजन को ईंधन की आपूर्ति, वातानुकूलन, शीतलन, अग्निशमन के लिए CO_2 की आपूर्ति, विभिन्न टैंकों को भरना और खाली करना आदि पाइपिंग–नेटवर्क के द्वारा ही होता है। परिचालन प्रतिबद्धताओं के मद्देनजर एक सामान्य युद्धपोत में 60 से अधिक बड़ी और छोटी प्रणालियाँ होती हैं जहाँ सभी पाइपिंग नेटवर्क को पूरा करने के लिए पी15बी परियोजना के प्रत्येक यार्ड में 16,000 से भी अधिक तथा पी17ए परियोजना के प्रत्येक यार्ड में 12,000 से भी अधिक पाइप–स्पूल की आवश्यकता होती है। निर्माण–नीति के अनुसार, दोनों परियोजनओं के प्रत्येक पोत/यार्ड में संपूर्ण पाइपिंग कार्य 13% के रूप में गिना जाता है।

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में एमडीएल की विभिन्न पोत परियोजनाओं में लगने वाले लगभग सभी पाइप–स्पूल (अनुबंधित भाग को छोड़कर) का निर्माण एस.बी.–पाइप शॉप में ही किया जाता है। पोत–निर्माण प्रक्रिया में एस.बी.–पाइप शॉप का योगदान अत्यंत उल्लेखनीय है।





सामान्य अग्निशमन जानकारी

दिनेश कुमार
मुख्य प्रबंधक, अग्निशमन विभाग

आग क्या है ?

फायर शब्द सुनते ही आँखों के सामने एक चित्र बन जाता है जिसमें ज्वलनशील पदार्थ जल रहा हो, आग और धुए की लपटे दिखाई दे रही हो, असहनीय तापमान हो, इसे आग या अग्नि कहा जाता है।

फायर ये एक रासायनिक प्रक्रिया है जिसे combustion प्रक्रिया भी कहते है। किसी भी पदार्थ का एक इग्निशन पॉइंट होता है यानी उस पदार्थ को जलाने वाला तापमान। तापमान की एक सीमा जहां पदार्थ में आग प्रज्वलित हो जाती है उसे इग्निशन पॉइंट कहते है।

मनुष्य के जीवन में आग का बहुत महत्व है। दिन में बहुत सारी परिस्थितियां होती है, जहां हम आग लगाते है। ये हमारे लिए वरदान के स्वरुप है। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार अग्नि पवित्र है। अग्नि की साक्षी में सात फेरे लेकर वैवाहिक जीवन की शुरूआत करते हैं यहाँ पवित्र अग्नि का पूजन होता है। उसे मनचाही आग कहते हैं।

पर अनचाही आग बहुत बड़ा विनाश का सर्जक बनती है। कही बार ऐसी असुरक्षित परिस्थितियां होती हैं। जहा हम नहीं चाहते फिर भी आग लग जाती है। ऐसी आग विकार रूप धारण करती है और विनाश करती है हमें इस परिस्थिति से बचना है।

आग की परिभाषा

ईंधन, तापमान और ऑक्सीज़न की रासायनिक प्रक्रिया से होने वाले रिएक्शन को आग कहते है। जिसके प्रज्वलित होने से प्रकाश और तापमान उत्पन्न होता है। जिसमे आग और धुएं की लपटे हमें दिखाई देती है। इसे आग कहते है।

आग लगने के लिए क्या प्रक्रिया होती है ?

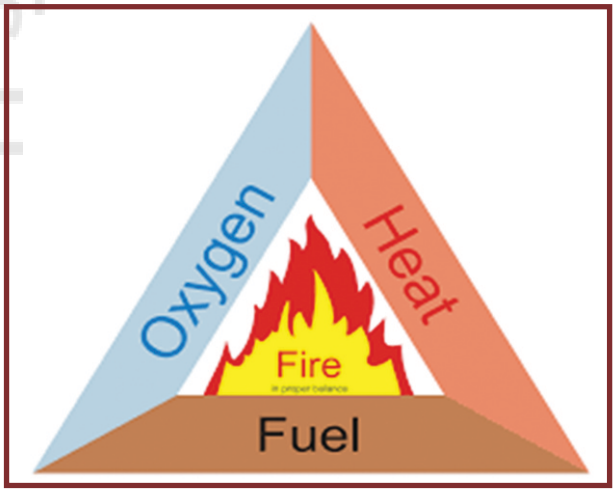
आग लगने के लिए, आग के लिए एक त्रिकोण की जरुरत होती है। किसी भी पदार्थ ऐसी परिस्थिति में पाए जाते है, जहां एक त्रिकोण बनता है। तो वहां आग लग जाती है। ये त्रिकोण ईंधन, ऑक्सीज़न और तापमान का होता है। ये तीनो मिल जाते है तो आग का निर्माण हो जाता है।

1– ईंधन – आग लगने के लिए ईंधन यानी कोई आग लगने वाला पदार्थ।

2– ऑक्सीज़न – आग लगने के लिए ऑक्सीज़न जरुरी है। वैसे ऑक्सीज़न हवा में शामिल होता है वही से आपूर्ति हो जाती है।

3– तापमान – उस जगह का तापमान ज्यादा होना चाहिए। पदार्थ के इग्निशन पॉइंट तक का तापमान हो।

Fire Triangle



कही पर भी आग लगने के लिए ये तीन मुख्य कारण हैं। यदि हम अग्नि को प्रज्वलित करते हैं। या कोई अनचाही फायर हो जाती है, तो ये परिस्थिति बनने के बाद ही फायर हो सकता है। ईंधन (पदार्थ), ऑक्सीज़न और तापमान ये तीन चीजों के मिलान से आग का निर्माण होता है। इसे सुरक्षा की भाषा में फायर ट्रैंगल भी कहते है। जिसे हम ऊपर की आकृति में देख सकते है।

आग के प्रकार

बरसो पहले जब फायर का क्लासिफिकेशन नहीं था, तब आग को बुझाना बहुत मुश्किल होता था। कौनसे प्रकार की आग है? और इस आग को बुझाने के लिए सही अग्निशामक कौनसा है? ये सभी चीजें परेशान करती थी और समय की बर्बादी भी करती थी। इसीलिए फायर के क्लास तय किये गए। कौन से क्लास की फायर पर कौनसा एक्सटिंग्विशर इस्तेमाल करना चाहिए ये भी तय हो गया। जिसे फायर को समझने में और आग को बुझाने में बहुत मदद मिलती है।

आग लगने का मुख्य स्त्रोत ईंधन (पदार्थ) है। इस ईंधन के आधार पर आग के प्रकार की रचना की गयी है। जलने वाले ईंधन के गुणधर्मो के आधार पर अलग – अलग श्रेणी में बाट दिया गया है। जिसे हम निचे विस्तार से समझेंगे।

टाइप्स ऑफ़ फायर में फायर क्लास को A, B, C, D में विभाजित कर दिया गया है। अलग – अलग प्रकार की आग बुझाने के लिए अलग – अलग प्रकार के फायर एक्सटिंग्विशर का इस्तेमाल होता है।

Types of Fire	Combustible material
A	लकड़ी, कपडा, कागज, चमड़ा
B	पेट्रोल, डीजल, केरोसिन, नेप्था
C	CNG, LPG
D	केबल्स, वायर, प्लास्टिक, शार्ट सर्किट

जैसे इलेक्ट्रिक फायर में शार्ट सर्किट से केबल्स ट्रांसफार्मर जैसे सॉलिड पदार्थ जलते है। जो क्लास A में रखे गए है। पर उस पर हम फायर एक्सटिंग्विशर Class A का इस्तेमाल नहीं कर सकते । अत: इलेक्ट्रिकल फायर पर हम पानी से आग नहीं बुझा सकते।

Fire Class - A

जो आग सॉलिड पदार्थ पर लगती है, उसे क्लास A में रखा गया है। वैसे दुनिया में कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है, जिस पर आग नहीं लग सकती। सबसे ज्यादा आग सॉलिड पदार्थ में लगती है। इसीलिए इसे क्लास A में रखा गया है।

उदाहरण के तौर पर देखे तो, लकड़ी, प्लास्टिक, कपड़ा, रबर, चमड़ा जैसे सभी पदार्थ पर लगने वाली आग को क्लास A फायर कहा गया है। इस प्रकार की आग को बुझाने के लिए जल से भरा अग्निशामक का इस्तेमाल किया जाता है।

Fire Class - B

लिक्विड / तरल को फायर क्लास बी की श्रेणी में रखा गया है, जिस लिक्विड से आग लगती हो, उसे बी क्लास की श्रेणी में रखा गया है।

उदाहरण के तौर पर, पेट्रोल, डीजल, केरोसिन, नेप्था, या रंग में आग लगती है, तो इसे क्लास बी की आग मानी जाती है।

Fire Class - C

फायर के सी क्लास की श्रेणी में जलने वाले गैसेस का समावेश किया गया है, जिसमे हाइड्रोजन, ब्यूटेन , मीथेन, एलपीजी, CNG जैसी ज्वलनशील गैस है। ये आग को तुरंत पकड़ लेती है। इस प्रकार के गैस से होने वाली फायर को सी क्लास की फायर कहा जाता है।

Fire Class - D

इलेक्ट्रिकल फायर को क्लास – डी की फायर कहा जाता है। इलेक्ट्रिकल फायर यानी जब किसी उपकरण में इलेक्ट्रिसिटी का प्रवाह चालू है और उस दौरान उस में आग लग जाती है तो उसे इलेक्ट्रिकल फायर कहते है।

ये आग कोई भी उपकरण जैसे ट्रांसफार्मर, ब्रेकर, स्विच या इलेक्ट्रिक पैनल में लग सकती है। इस प्रकार की आग को क्लास डी कहा जाता है।

आग लगना और आग लगाना ये दोनों में बहुत बड़ा अंतर है। खाना पकाने के लिए हमारे घरो में रोज आग लगायी जाती है। जो हमारे जठराग्नि को तृप्त करती है। इसे हम सर्जक कह सकते है। पर दूसरी आग है, जो विपरीत परिस्थिति में आग लग जाती है और ये आग विनाश कर देती है।

अग्निशामक के प्रकार

फायर Extinguisher आग को बुझाने वाला उपकरण है। अनचाही परिस्थिति में जो आग लग जाती है, उसे बुझाना जरुरी है। ऐसी आग जो एक बड़ा अकस्मात् का रूप धारण कर सकती है। उसे बुझाना बहुत जरुरी है। ऐसी आग को बुझाने के लिए अग्निशामक (Fire Extinguisher) का इस्तेमाल होता है।

Fire Extinguisher का इस्तेमाल छोटी आग बुझाने के लिए किया जाता है। जहा आग की शरुआत हो, अभी विकार रूप न लिया हो, ऐसी परिस्थिति में अग्निशामक का

उपयोग होता है।

फायर एक्सटिंग्विशर अलग – अलग प्रकार के होते है। ये प्रकार आग की श्रेणी के आधार पर तैयार किया गया है। इसे कौन से क्लास की आग में कौनसा अग्निशामक इस्तेमाल होगा इसके आधार पर फायर Extinguisher का प्रकार दिया गया है।

1- Water Type Fire Extinguisher

इस प्रकार का अग्निशामक क्लास **A** प्रकार की आग बुझाने के लिए किया जाता है। वाटर टाइप फायर एक्सटिंग्विशर के ऊपर वाटर का स्टीकर लगा हुआ रहता है। लकड़ी, कागज, रबर जैसे ऑर्गनिक मटेरियल की आग बुझाने के लिए इसका इस्तेमाल खास तौर पर किया जाता है।

वाटर टाइप फायर एक्सटिंग्विशर का उपयोग इलेक्ट्रिकल फायर में नहीं कर सकते। क्योंकि, इलेक्ट्रिसिटी का वहन पानी में बहुत आसानी से होता है। यदि किसी उपकरण में इलेक्ट्रिक सप्लाई है और इसमें पानी का अग्निशामक चलाएंगे तो, आग बुझाने की कोशिश करने वाले को भी शॉक लग सकता है।

किचन फायर और Flammable गैस और Liquid में आग लगती है, तो इसमें भी वाटर फायर एक्सटिंग्विशर का इस्तेमाल नहीं होता है।

2- Form Type Fire Extinguisher

इस प्रकार का अग्निशामक का इस्तेमाल क्लास **B** फायर पर होता है। वैसे कही ऐसी स्थित भी होती है जहा **A** क्लास फायर में भी इस्तेमाल होता है।

फ़ोम टाइप के अग्निशामक पर फ़ोम का स्टीकर लगा रहता है और ये क्रीम कलर का स्टीकर होता है, ये इस अग्निशामक की पहचान है।

फॉर्म प्रकार के अग्निशामक का उपयोग आर्गेनिक मटेरियल और Flammable लिक्वीड की आग बुझाने हेतु किया जाता है। इस प्रकार का अग्निशामक आग के ऊपर एक लेयर बना देता है जिसे ऑक्सीज़न मिलना बंद हो जाता है। और आग बुज जाती है।

इलेक्ट्रिक फायर, किचन फायर और मेटल फायर में फ़ोम का इस्तेमाल नहीं करना है।

3- Dry Chemical Powder Fire Extinguisher

इस प्रकार के अग्निशामक को DCP एक्सटिंग्विशर के शॉर्ट नाम से जाना जाता है। जिसे ड्राई केमिकल पाउडर भी कहा जाता है। DCP प्रकार के फायर एक्सटिंग्विशर का इस्तेमाल क्लास A , B और C प्रकार की फायर के लिए किया जाता है।

तीनों क्लास की फायर में इस्तेमाल होने की वजह से इसे ABC टाइप फायर Extinguisher भी कहा जाता है।

इस प्रकार के एक्सटिंग्विशर पर Powder लिखा रहता है और ये ब्लू कलर का लेबल रहता है। इसे कोई भी पहचान सकता है

DCP का उपयोग, आर्गेनिक मटेरियल, Flammable गैस, लिक्वीड, एवं पेट्रोलियम पदार्थ पर भी कर सकते है।

4- Carbon Dioxide (CO_2) Fire Extinguisher

इस प्रकार का फायर एक्सटिंग्विशर इलेक्ट्रिक उपकरण में आग बुझाने के लिए किया जाता है। इस प्रकार के फायर एक्सटिंग्विशर पे CO_2 लिखा रहता है और उस पर ब्लैक कलर का स्टीकर लगा हुआ रहता है।

Co_2 को Flammable Liquid और इलेक्ट्रिक फायर में इसका इस्तेमाल किया जाता है।

किचन फायर, लकडी, आर्गेनिक मटेरियल एवं flammable मेटल में इसका इस्तेमाल नहीं कर सकते।

अनचाही आग लगने के कारण

औद्योगिक क्षेत्र में फायर एंड सेफ्टी का बहुत महत्व होता है। फिर भी कई बार ऐसी परिस्थिति बन जाती है, जहां से अकस्मात् हो जाता है। यहाँ कुछ कारण लिखे हैं, जिससे आग लगने की संभावना बढ़ जाती है।

1– इलेक्ट्रिक फायर में मशीन ओवर लोड होना।

2– केबल में लूज़ कनेक्शन होना ।

3– शार्ट सर्किट होना ।

4– कार्यस्थल पर धूम्रपान करना ।

5– कार्यस्थल को साफ सुथरा नहीं रखना।

6– कोई इलेक्ट्रिक स्पार्क, गैस रिसाव, लिक्वीड रिसाव को अनदेखा करना ।

7– सामान्य संरक्षा नियमों का पालन नहीं करना ।

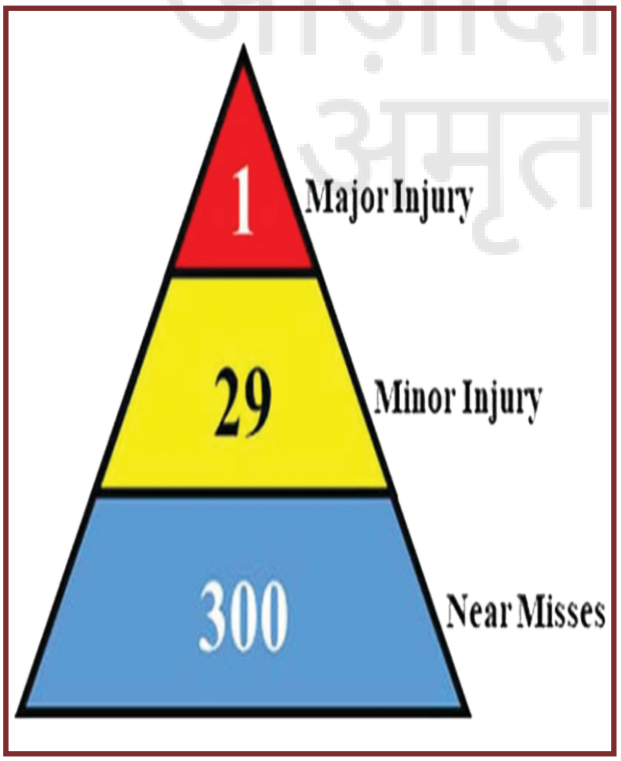
नियर मिस, निकट चूक, बाल बाल बचना



परेश महतो
मुख्य प्रबंधक, संरक्षा विभाग

मानव शरीर एक ऐसा जीता जागता यंत्र है, जिसकी सुरक्षा स्वंय मानव ही कर सकता है। फिर भी मानव जीवन आज ऐसे वातावरण से गुजर रहा है, किसी भी समय, किसी भी स्थान पर, घर के अंदर या बाहर, उसके साथ कोई भी दुर्घटना होने की संभावना बनी रहती है।

ऐसा नहीं है कि दुर्घटनाएँ आज के समय में ही हो रही हैं, पूर्व में भी होती थी,लेकिन उनकी संख्या कम थी या यूँ कहें कि दुर्घटनाएँ होने की संभावना कम थी। कारण था उनका मशीनों से दूरी, उनकी संख्या कम होना।



परिचय

नियर मिस ऐसी घटनाएँ हैं जिससे शारीरिक नुकसान और/या संपत्ति का नुकसान हो सकता था, लेकिन हर बार ऐसा नहीं होता है। नियर मिस एक अनियोजित घटना है जिसके परिणाम स्वरूप चोट, या क्षति होने की संभावना थी लेकिन सौभाग्य से इस बार ऐसा नहीं हुआ लेकिन ऐसा हो सकता था। कार्यस्थलों में नियर मिस की स्थितियाँ सामान्य घटनाएँ होती हैं, हालाँकि उन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। दुर्घटनाओं को होने से कैसे रोका जाए,यह जानने के लिए नियर मिसेज को एक मुफ्त सबक के रूप में देखा जा सकता है। इसलिए, नियर मिस के बारे में जानकारी एकत्र करना और उचित सुधारात्मक कार्रवाई शुरू करने के लिए जानकारी का विश्लेषण करना कार्यस्थल पर संरक्षा को बढ़ावा देने का एक बेहतरीन तरीका है।

नियर मिस की घटना, यानी वास्तविक दुर्घटनाओं के अग्रदूत, उच्च स्तर की संरक्षा संस्कृति और परिचालन नियंत्रण को प्रदर्शित करता है, संभावित रूप से हानिकारक घटना के परिणामों से मानव को सफलतापूर्वक बचाने के लिए आवश्यक है।

"हिम शैल सिद्धांत" (Iceberg theory) के अनुसार प्रत्येक रिपोर्ट की गई बड़ी चोट से पहले, कई सारी छोटी दुर्घटनाएँ होती हैं या यह भी कह सकते हैं कि लगभग 300 नियर मिस घटनाओं के बाद एक बड़ी घटना घटती है। बाद के अध्ययनों ने समान निष्कर्ष निकाले हैं भले ही बड़ी चोटों और नियर मिस के बीच का अनुपात भिन्न हो सकता है। हालाँकि, नियर मिस की पहचान करने के महत्व को व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है, क्योंकि जब दुर्घटनाओं के संभावित कारणों को समाप्त कर दिया जाता है, तो बड़ी चोटों की संभावना कम हो जाती है।

नियर मिस के बारे में जानकारी एकत्रित करना

नियर मिस का विश्लेषण करना एक प्रभावी संरक्षा प्रबंधन प्रणाली का हिस्सा है। नियर मिस की रिपोर्ट करने के लिए कार्यस्थल पर कार्यरत कामगार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि कर्मचारियों से लेकर प्रबंधन तक नियर मिस घटनाओं की जानकारी कैसे पहुँचाई जाए। आमतौर पर नियर मिस मामलों की सबसे व्यापक रिपोर्टिंग कार्यस्थलों में उच्च स्तर की संरक्षा संस्कृति के साथ की जाती है। इन अत्याधिक सुरक्षा उन्मुख कार्यस्थलों में, श्रमिकों को सभी नियर मिस की रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना है और सुरक्षा के लिए प्रबंधन की प्रतिबध्दता को दर्शाता है।

कार्यस्थल में सभी के लिए नियर मिस के बारे में जानकारी एकत्र करने की मूल बातें (क्यों कब और कैसे) स्पष्ट होनी चाहिए। कर्मचारियों को यह समझाने की जरुरत है कि प्रेरक कारक जानकारी इकट्ठा करना है न कि यह पता लगाना कि कौन दोषी है। इसके अतिरिक्त इसका उद्देश्य यह होता कि नियर मिस से सीख लेते हुए उस तरह होने वाली आगे की दुर्घटनाओं को रोकना है। जब कर्मचारी इस संदेश को समझते हैं कि नियर मिस से सीख के कारण उन्हें दंडित नहीं किया जाएगा,तो यह आमतौर पर उन्हें नियर मिस की बेहतर रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

प्रत्येक नियर मिस मामले की रिपोर्टिंग में निम्नलिखित मुख्य बिंदु शामिल होने चाहिए:

क्या हुआ?

कब हुआ?

कहाँ हुआ?

किसके साथ हुआ?

प्रभावित करने वाले साधन?

घटना को घटित होने से रोकने वाले कारक?

भविष्य में इसी तरह के मामलों को कैसे रोका जाए,इसके बारे में सुझाव?

नियर मिस रिपोर्ट प्राप्त करना

एक सफल प्रक्रिया में हमेशा इस बारे में जानकारी शामिल होती है कि नियर मिस रिपोर्ट कौन प्राप्त करता है और कौन रिपोर्ट को संभालता है। रिपोर्ट प्राप्त करने और अनुप परिस्थिति (छुट्टियों, बीमारी आदि) के मामले में बैकअप प्रदान करने के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति को नियुक्त करना आवश्यक है। इस बारे में एक सामान्य समझ भी होनी चाहिए कि नियर मिस रिपोर्ट को संभालने में कितना समय लगता है। भले ही सभी सुधारात्मक कार्रवाईयों को तुरंत लागू करना संभव न हो, फिर भी रिपोर्ट को सही ढंग से संभाला जाना चाहिए।



नियर मिस रिपोर्टिंग में सुधार कैसे करें?

रिपोर्टिंग प्रणाली को आसान बनाएँ: कर्मचारियों को एक ऐसी प्रणाली प्रदान करें जिसका उपयोग करना, समझना और संबंधित कार्मिकों को तुरंत रिपोर्ट देना आसान हो।

आसानी से रिपोर्ट भरें: कर्मचारियों के लिए अतिरिक्त कार्य उत्पन्न किए बिना घटनाओं के विवरण को सटीक रूप से रिपोर्ट में भरने के लिए सक्षम बनाना।

जिज्ञासा उत्पन्न करें: सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए,कर्मचारियों को नियर मिस रिपोर्टिंग सिस्टम के महत्व और इसका उपयोग करने के तरीके के बारे में सभी बारीकियों को जानना होगा।

त्वरित जोखिम समाधान: कार्य–समय के न्यूनतम नुकसान के साथ घटनाओं की जाँच और समाधान के लिए त्वरित कार्रवाई दल निर्धारित करें।

नियर मिस रिपोर्ट्स को हैंडल करना: नियर मिस रिपोर्ट प्राप्त करने और संशोधित करने के बाद, सुधारात्मक कार्यों पर विचार करने की आवश्यकता है। नियर मिस की जाँच उसी तरह की जानी चाहिए जैसे व्यावसायिक दुर्घटनाओं की जाँच एवं उनके मूल कारणों का विश्लेषण किया जाता है। प्रबंधन और श्रमिकों के बीच सहयोग में सुधारात्मक कार्यों पर विचार किया जाना चाहिए। नियर मिस मामलों की जाँच करते समय, इस प्रश्न पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, क्या हुआ होगा? वे नियर मिस हुए मामले जिनमें तत्काल सुधारत्मक कार्रवाई की आवश्यकता होती है,उन्हें तुरंत ठीक कर लेना चाहिए। अक्सर सुधारात्मक कार्रवाईयों को तुरंत निष्पादित करना संभव नहीं होता है तो ऐसे मामलों में, तत्काल खतरे को हल करने की जरूरत है और बाद में स्थायी, दीर्घकालिक समाधान पर विचार किया जा सकता है।



सुधारात्मक क्रियाओं का चयन

सुधारात्मक क्रियाओं की योजना के लिए संसाधनों की आवश्यकता होती है,जैसे स्टाफ और समय। यह संभव है कि पहला समाधान सबसे अच्छा नहीं है और इसलिए इन प्रारंभिक क्रियाओं का मूल्यांकन एक अवधि के बाद पुन: किया जाना चाहिए और शायद नई सुधारात्मक कार्रवाईयां ज्यादा बेहतर हो। एक अच्छा अभ्यास हमेशा सुधारात्मक कार्यों के चयन में शामिल आधिकारिक निर्णय लेने कि क्षमताओं के साथ अधिकार का व्यक्त होना है खासकर अगर सुधारात्मक कार्यों के लिए निवेश की आवश्यकता होती है। एक अन्य विकल्प श्रमिकों और सुपरवाईजर या फोरमैन के लिए पहले सुधारात्मक कार्यों पर विचार करना और इसे अनुमोदन एवं निर्णय लेने के लिए शीर्ष प्रबंधन को प्रस्तुत करना है। सुधारात्मक कार्रवाइयों का चयन करते समय, जोखिम को समाप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। यह उदाहरण के लिए खतरे को दूर करके या कार्य प्रक्रियाओं को बदलकर किया जा सकता है। फिर सबसे बेहतर सुधारात्मक सुझाव एवं उपाय का चुनाव करते हुए जोखिम को एक स्वीकार्य स्तर तक कम किया जाए।

कार्यान्वयन और फॉलो-अप

सुधारात्मक कार्रवाईयों पर निर्णय लेने के बाद,एक प्रभारी व्यक्ति का नाम लेकर और सुधारात्मक कार्यों को लागू करने के लिए अनुसूची पर सहमति देकर कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। समय सीमा के बाद सुधारात्मक कार्रवाईयों के कार्यान्वयन का पालन किया जाना चाहिए।

प्रतिपुष्टि (Feedback)

संरक्षा के प्रति प्रतिबध्दता बनाने के लिए व्यावसायिक संरक्षा मुद्दों के संचार में पारदर्शिता महत्वपूर्ण है। एक व्यक्ति जिसने नियर मिस की स्थिति की सूचना दी है,उसे रिपोर्ट संभालने वालों से प्रतिक्रिया प्राप्त करनी चाहिए।

सुधारात्मक कार्रवाई के निर्णय के बाद मूल रिपोर्ट करने वाले व्यक्ति को सूचित किया जाना चाहिए। यह दूसरों को अतिरिक्त नियर मिस रिपोर्ट प्रदान करने के प्रोत्साहित करेगा, क्योंकि वे देखेंगे कि वास्तविक ठोस परिवर्तन रिपोर्टिंग के परिणामस्वरूप होंगे और रिपोर्ट को गंभीरता से लिया जा रहा है। यदि नियर मिस रिपोर्ट में किसी सुधारात्मक कार्रवाई की आवश्यकता नहीं है, तो इसकी सूचना उस व्यक्ति को भी दी जानी चाहिए जिसने मूल रिपोर्ट दी थी। इससे कर्मचारियों के पास छूटे हुए मामलों की रिपोर्ट करने की प्रतिबध्दता बढ़ेगी, वे संतुष्ट हो सकते हैं यदि उन्हें इस बारे में आश्वासन मिलता है कि संशोधन आवश्यक क्यों नहीं है, यानी वे देख सकते हैं कि उनकी रिपोर्ट को संभाला गया है और सुधारात्मक कार्रवाई पर विचार किया गया है।

नियर मिस से सीखने के लिए सफलतम कारक

दुर्घटना की रोकथाम निरंतर कार्य है। न तो कोई कर्मचारी और न ही कोई नियोक्ता यह सोच सकता है कि जब तक जोखिम मूल्यांकन किया गया है, तब तक सब कुछ अच्छी स्थिति में है। संबंधित कार्यस्थल में जोखिम की प्रकृति,उनकी कार्य गतिविधि में होने वाले संभावित परिवर्तन की डिग्री सेल्सियस, या किसी दुर्घटना के निष्कर्षों या लगभग चूक की जाँच के परिणाम के आधार पर जोखिम मूल्यांकन की नियमित रूप से समीक्षा की जानी चाहिए।

सभी दुर्घटनाओं और नियर मिस की जांच की जानी चाहिए और मूल कारणों का पता लगाने की जरूरत है,भले ही सुधारात्मक कार्रवाई तुरंत की गई हो। इसका कारण यह है कि दुर्घटना की समान संभावना कार्यस्थल में अन्यत्र मौजूद हो सकती है।

आपको नियर मिस की जाँच क्यों करनी चाहिए

यदि आपके संस्था में नियर मिस की रिपोर्टिंग नहीं है,तो संभव है कि नियर मिस हों,लेकिन आप इनके बारे में नहीं जानते हैं। सबसे पहले आप इसके बारे में जान सकते हैं जब कोई दुर्घटना होती है। कोई कहता है, ओह हा,पिछले हफ्ते मेरे साथ भी ऐसा हुआ था,लेकिन सौभाग्य से मुझे चोट नहीं लगी। अच्छा नहीं हुआ क्योंकि अबकी बार किसी को चोट लगी हैं,और इसे रोका जा सकता था। नियर मिस रिपोर्टिंग के द्वारा,आप पिछले हफ्ते उस नियर मिस के बारे में जान गए होते।

नियर मिस रिपोर्टिंग का इस्तेमाल ब्लेम गेम खेलने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। एक नियर मिस की सूचना देकर,कार्यकर्ता आपको समस्या के बारे में बताने के लिए समय निकाल रहे है। वे सुधार के लिए विचार सामने रख रहे हैं। वे बेहतर स्वास्थ्य और संरक्षा संस्कृति बनाने में मदद करने में खुद को शामिल कर रहे है। यह तो अच्छी बात है। याद रखें कि एक नियर मिस एक ऐसी घटना है जो नुकसान पहुँचा सकती है। यदि आप नियर मिस कि जाँच नहीं करते हैं, तो आप दुर्घटना को रोकने का एक अक्सर खो रहे हैं। यदि नियर मिस दोहराई जाती है, तो अगली बार कोई घायल हो सकता है।

नियर मिस से सीखना

दुर्घटनाओं के कारण अक्सर नियर मिस के कारण समान होते हैं। जीरो एक्सीडेंट विजन के अनुसार सभी दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है। दुर्घटना की रोकथाम में एक महत्वपूर्ण उपकरण उन दुर्घटनाओं से सीखना है, जो हुई हैं, और इस सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से, भविष्य में फिर से होने वाली इसी तरह की दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सुधारात्मक कार्रवाई शुरू करना है। एक नियर मिस को एक महत्वपूर्ण चेतावनी के रूप में माना जाना चाहिए और माना जाना चाहिए कि दुर्घटना और बड़ी हो सकती है। ऐसे में हादसों कि जाँच जरूरी है। उन्नत संरक्षा प्रणाली वाले कार्यस्थल नियर मिस मामलों के लिए समान जाँच करते हैं। वास्तव में,यह कहा जा सकता है कि नियर मिस केस दुर्घटना की रोकथाम में एक मुक्त सबक प्रदान करते हैं।

दुर्घटना की रोकथाम में अतीत में क्या हुआ है, इसका विश्लेषण करना आवश्यक है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि दुर्घटनाएँ या नियर मिस के मामले क्यों हुए हैं और इसे दूर करने के लिए क्या कार्रवाई की जा सकती है कि वे दोबारा न हों। सभी दुर्घटनाओं और नियर मिस के मामलों के मूल कारणों का पता लगाने से कार्यस्थल में खतरों और जोखिम की पहचान करने में मदद मिलती है,जिसके आधार पर सुधारात्मक कार्रवाई करने की आवश्यकता होती है।

आम तौर पर सूचना बाँटने या नियर मिस मामलों की रिपोर्टिंग के महत्व पर अभियान चलाने के बाद,सभी कार्यस्थलों पर रिपोर्ट किए गए नियर मिस की संख्या बढ़ जाती है। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि पहले की तुलना में अधिक जोखिम है बल्कि यह है कि नियर मिस की स्थितियों और संभावित खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ी है। रिपोर्ट की गई चूकों की संख्या और दुर्घटनाओं की संख्या के बीच एक विपरीत संबंध है। नियर मिस पध्दति लागू करने वाली कंपनियों में पाया गया कि, जहाँ पर नियर मिस की रिपोर्टिंग संख्याओं में वृध्दि हुई वहाँ पर दुर्घटनाओं की दर में कमी आई है। नियर मिस रिपोर्ट की दर को उद्योग संरक्षा जागरुकता के एक महत्वपूर्ण संख्यात्मक संकेतक के रूप में देखा जा सकता है।

एमडीएल में एसएपी-ईआरपी कार्यान्वयन



संजय मिश्रा
मुख्य प्रबंधक (मानव संसाधन)

एस.ए.पी के विभिन्न मॉड्यूल (Module) में हम सभी प्रतिदिन कुछ न कुछ कार्य करते हैं और इसने हमारे जीवन को आसान ही बनाया है। एक तरफ जहाँ एस.ए.पी उपयोगी होने के साथ कार्यों को सुलभ बनाता है वहीं पर यह जटिल भी है। जो भी हो, एस.ए.पी के केंद्रीकृत डेटा प्रबंधन (सेंट्रलाइज्ड डेटाबेस) के कारण यह ई.आर.पी सिस्टम अति उपयोगी सिद्ध हुआ है और इंडस्ट्री में इसे व्यापक रूप से अपनाया गया है। एस.ए.पी ई.आर.पी एमडीएल में 2009 में कार्यान्वित हुआ था। इस लेख के द्वारा सामान्यत: एस.ए.पी के विषय में विशेषत: एच.आर. मॉड्यूल की जानकारी प्रदान करने का प्रयास किया है।

एस.ए.पी ईआरपी क्या है?

एसएपी कंपनी की स्थापना जर्मनी में 1 972 में पांच पूर्व–आईबीएम इंजीनियरों वेलेनरेथर, होप, हेक्टर, प्लैटनर और त्सचिरा द्वारा की गई थी। इसका पहला ग्राहक जर्मन शाखा की इंपीरियल केमिकल इंडस्ट्रीज थी जहां उन्होंने payroll और accounting के लिए मेनफ्रेम प्रोग्राम विकसित किया और इसे रियल–टाइम सिस्टम सॉफ्टवेयर कहा। SAP का पहला कमर्शियल प्रोडक्ट SAP R / 98 था। 1993 में, SAP Microsoft के साथ मिलकर काम करती है। क्रिस्चियन क्लेन SAP के वर्तमान सीईओ हैं।

एसएपी एक ईआरपी (एंटरप्राइज़ रिसोर्स प्लानिंग) सॉफ्टवेयर है। English language में SAP शब्द का पूर्ण रूप Systems, Applications and Products होता है जिसका हिंदी अर्थ सिस्टम, अनुप्रयोग और उत्पादों होता है। एसएपी किसी संगठन को एकीकृत समाधान प्राप्त करने के लिए उसके सभी कार्यक्षमताओं को संसाधित अथवा प्रोसेस (Process) करने के लिए एक एकीकृत व्यापार सॉफ्टवेयर है। ओपन क्लाइंट / सर्वर सिस्टम के लिए एसएपी आर / 3 (SAP R/3) एंटरप्राइज़ एप्लीकेशन सूट (application suite) ने व्यवसाय सूचना मैनेजमेंट (management) समाधान प्रदान करने के लिए एक नए तरीके स्थापित किए हैं। एसएपी का मूल विचार ग्राहकों को वो योग्यता प्रदान कराना है जिससे की वो एप्लीकेशन्स की विस्तृत श्रृंखला को एक कॉमन कॉर्पोरेट डेटाबेस से मैनेज कर सके। आज एसएपी एप्लीकेशन्स (SAP applications) इतने विकसित हो गए है कि आईबीएम और माइक्रोसॉफ्ट समेत कई कॉर्पोरेशंस (corporations) अपने स्वयं के व्यवसाय चलाने के लिए एसएपी उत्पादों का उपयोग कर रहे हैं।

एसएपी (SAP) बिजनेस एप्लीकेशन के बाजार में एक बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी है, 2021 में कंपनी का कारोबार 30 बिलियन से अधिक हुआ था। एसएपी सॉफ़्टवेयर 60,000 से अधिक कंपनियों द्वारा स्थापित किए गए हैं, और 180 से अधिक देशों में एसएपी का उपयोग किया जाता है।

एसएपी ईआरपी (SAP ERP) वित्तीय और प्रबंधन लेखांकन (financial and management accounting), कर्मचारी प्रबंधन (employee management), परिचालन गतिविधियों और कंपनी सेवाओं के सभी क्षेत्रों को शामिल करती है। स्वयं सेवा, विश्लेषण के लिए सूचना सेवाओं के इम्प्लीमेंटेशन (Implementation) के लिए आवश्यक पूर्ण कार्यक्षमता प्रदान करता है। यह व्यवसायों को अपनी व्यावसायिक आवश्यकताओं में तेजी से

बदलाव करने की अनुमति देता है। व्यवसायों को अतिरिक्त स्रोत कोड (Source Code) जोड़ने के लिए यूजर–एग्जिटस (User-exits) प्रदान किए जाते हैं। स्क्रीन वेरिएंट (Screen Variants) जैसे टूल्स आपको फ़ील्ड विशेषताओं को सेट करने के लिए प्रदान किए जाते हैं ताकि उन्हें छिपाने, प्रदर्शित करने और उन्हें अनिवार्य फ़ील्ड बना सकें। अपनी अपग्रेडिंग कॉस्ट्स (upgrading costs) को कम करने के लिए, स्टैण्डर्ड प्रोग्राम्स (standard programs) और तालिकाओं को यथासंभव बदला नहीं जाना चाहिए। एसएपी जैसे स्टैण्डर्ड व्यावसायिक एप्लीकेशन्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करने का मुख्य उद्देश्य सभी कार्यक्रमों के विकास और परीक्षण पर समय और धन व्यय की मात्रा को कम करना है।

एस.ए.पी. के संस्करण

1. एसएपी आर / 1 (SAP R/1) : यह एसएपी का पहला संस्करण था और 1972 में लॉन्च किया गया था । अल्फाबेट आर (R) स्टैंड्स फॉर रियल टाइम डाटा प्रोसेसिंग। यह एक स्तरीय आर्किटेक्चर (architecture) है ।

2. एसएपी आर / 2 (SAP R/2): यह 1979 में पेश किया गया एसएपी का दूसरा संस्करण था । एक डेटाबेस और संवाद आधारित ओरिएंटेड (oriented) व्यापार समाधान होने के लिए और अधिक जाना जाता है ।

3. एसएपी आर / 3 (SAP R/3) को विशेष रूप से ओपन क्लाइंट / सर्वर सिस्टम (client/server systems) को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया था, जिसने नए मानकों को निर्धारित किया है जो व्यापार सूचना से संबंधित समाधान प्रदान करने की आवश्यकता को पूरा करते हैं।

4. एसएपी ईआरपी केंद्रीय कॉम्पोनेन्ट (ईसीसी) 6.0 (SAP ERP Central Component (ECC) 6.0)

5. एसएपी एस 4 हाना (SAP S4 HANA): यह एसएपी का एडवांस्ड ईआरपी समाधान है, और इसे क्लाउड (cloud) या परिसर में स्थापित किया जा सकता है। MDL में सूट ऑन हाना स्थापित है।

एस.ए.पी. के मॉड्यूल

नीचे एसएपी के कुछ महत्वपूर्ण मॉड्यूल, जो कि एम.डी.एल में कार्यान्वित हैं, को समझाया गया है:

1. एसएपी एबीएपी (SAP ABAP <https://www.stechies.com/abap/): एसएपी एप्लिकेशन के विकास और संशोधन के लिए एडवांस्ड बिज़नेस एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग (ABAP) भाषा है जो अब वेब डिन्प्रो ABAP है।

2. एसएपी हाना (SAP HANA): हाना एक ऐसा प्लेटफार्म (platform) है जो डेटाबेस, डाटा प्रोसेसिंग और एप्लिकेशन प्लेटफ़ॉर्म क्षमताओं को मेमोरी (Memory)में जोड़ता है।

3. एसएपी एम एम (SAP Material Management): यह मॉड्यूल आपको सामग्रियों की खरीद को संभालने और सूची प्रबंधित करने में मदद करता है (क्योंकि आपको कच्चे माल का भंडार रखना होगा)।

4. एसएपी फीको (SAP FI CO - Financial Accounting): यह मॉड्यूल (module)आपकी सभी लेखांकन वित्तीय आवश्यकताओं को प्रबंधित करने में मदद करता है।

5. एसएपी पीपी (Production Planning): एक SAP मॉड्यूल है, जिसे विशेष रूप से उत्पादन और निर्माण में शामिल विभिन्न विभागों को एकीकृत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

6. एसएपी पी एम (Plant Maintenance): एसएपी संयंत्र रखरखाव (पीएम) और सामग्री प्रबंधन (एमएम) मॉड्यूल से डेटा एकीकृत करें और एक्सेल जैसे सामान्य इंटरफेस का उपयोग करके एसएपी डेटा अपलोड और डाउनलोड को सरल बनाएं।

7. एसएपी पी एस (Project Services): SAP प्रोजेक्ट सिस्टम मॉड्यूल (SAP PS) एक एकीकृत

परियोजना प्रबंधन उपकरण है जो आपके प्रोजेक्ट सिस्टम और अन्य SAP एप्लिकेशन घटकों के सभी पहलुओं पर नज़र रखता है। SAP PS यह सुनिश्चित करता है कि संगठन की व्यावसायिक प्रक्रिया को कुशलतापूर्वक और शीघ्रता से संभाला जाए।

8. एसएपी क्यू एम (Quality Management): यह मॉड्यूल आपके ग्राहकों का समर्थन करता है, उदाहरण, बिक्री आदेश और ग्राहक को बिलिंग करने की दिशा में सभी तरह से यह आपको अपने लॉजिस्टिक्स (logistics)को प्रभावी ढंग से संगठित करने में सक्षम करेगा।

9. एसएपी एचआर (SAP Human Resource): यह आपको अपन सभी कर्मचारियों (मुआवजे प्रबंधन, बजट प्रबंधन, कार्मिक विकास, प्रशिक्षण और घटना प्रबंधन, यात्रा प्रबंधन इत्यादि) से संबंधित सब कुछ प्रबंधित (manage)करने में मदद करता है।

एस.ए.पी एच.सी.एम (SAP HCM)

HCM का फुल फॉर्म Human Capital Management होता है। SAP HCM SAP का एक प्रमुख मॉड्यूल है। इसे Human Resource Management System (SAP HRMS) या SAP Human Resource (HR) भी कहा जाता है। SAP HCM सॉफ़्टवेयर आपको रिकॉर्ड रखने की प्रक्रियाओं को ऑटोमेट करता है। MDL में हमने लगभग सभी प्रक्रियाओं, कार्य संपादनों व दावों को या तो R/3 अथवा इंट्रानेट पोर्टल पर ऑनलाइन कर दिया है। इस पहल के द्वारा हमने कर्मचारियों के मानव संसाधन संबंधित कार्यों को सुगम बनाया है जिससे कर्मचारी को मानव संसाधन विभाग में कम से कम आना पड़ता है अत: वे अपना अधिकतर समय अपने कार्यस्थल पर दे पाते हैं फलस्वरूप उनकी उत्पादकता बढ़ी है। इस पहल के द्वारा ना केवल मानव संसाधन ने अपने प्रक्रियाओं में पारदर्शिता स्थापित किया है बल्कि अपने अधिकारियों व कर्मचारियों के कार्य को सुगम व सरल बनाकर उनकी भी उत्पादकता बढ़ाई है। मानव संसाधन विभाग आगे अपने सभी प्रक्रियाओं को ऑनलाइन करने के लिए प्रतिबद्ध है। SAP HCM में कई सब–मॉड्यूल होते हैं और ये सभी सब–मॉड्यूल एक दूसरे के साथ एकीकृत होते हैं। MDL में कार्यान्वित किये गए सब–मॉड्यूल निचे दिए गए हैं:

1– पर्सनल एडमिनिस्ट्रेशन

ये मॉडल एम्प्लोयी के पर्सनल डाटा को सेव और मैनेज करने की सुविधा प्रदान करता है। ये मॉड्यूल पेपर–बेस्ड प्रोसेस को रिप्लेस करता है जिससे डाटा हमेशा उपलब्ध रहता है और जिससे अपडेट भी किया जा सकता है, जैसे कर्मचारी का पर्सनेल नंबर, नाम, और एड्रेस, डिपार्टमेंट, पे स्केल इत्यादि के अलावा एम्प्लोयी की सैलरी एडजस्टमेंट, एंट्री और एग्जिट भी मेन्टेन की जाती है।

2– टाइम मैनेजमेंट

यह प्रक्रिया एक निश्चित अवधि के लिए कर्मचारी के प्रदर्शन की योजना, रिकॉर्डिंग और मूल्यांकन की प्रक्रियाओं में सहायता करती है। इस प्रक्रिया में संगठन में कर्मचारी की उपस्थिति और अनुपस्थिति के प्रभाव का मूल्यांकन किया जाता है। साथ ही उपस्थिति प्रबंधन, वेतन की गणना, लॉग–इन और लॉग–आउट रिपोर्ट आदि भी इस प्रक्रिया में शामिल हैं। टाइम रिकॉर्डिंग या तो एम्प्लोयी द्वारा या टाइम रिकॉर्डिंग मशीन (बायोमेट्रिक फिंगरप्रिंट)। SAP HCM टाइम मैनेजमेंट मॉडल इसे सपोर्ट करता है जिससे प्रोसेस आसान हो जाता है।

3– पेरोल एकाउंटिंग

यह प्रक्रिया जैसा कि शब्द परिभाषित करता है, कर्मचारियों को दिए जाने वाले वेतन–मान और मुआवजे के बारे में है। इस प्रक्रिया में सैलरी से लेकर ओवरटाइम पे, कॉम्प–ऑफ पे और मुआवजा प्रोग्राम तक सब कुछ कैलकुलेट किया जाता है। SAP HCM में सारी आवश्यक इनफार्मेशन होती है और यह मास्टर डेटा जैसे सैलरी ग्रुप के साथ–साथ वर्किंग आवरस, एब्सेंस टाइम्स, फ्लेक्सिबल सैलरी कंपोनेंट्स और स्पेशल पेमेंट्स पर लागू होता है। SAP HCM PY विभिन्न पेरोल अवधियों को भी सपोर्ट

करता है। यह इंटरनेशनल लेवल पर स्थित कंपनियों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद है।

4– ऑर्गनाइजेशनल मैनेजमेंट

यह प्रक्रिया एक पूर्व–निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अलग–अलग लोगों को एक समान मंच के तहत काम करने के लिए एक संगठित तरीके को परिभाषित करती है। यह कार्य केंद्र में समय और संसाधनों का स्मार्ट प्रबंधन सुनिश्चित करता है। ऑर्गनाइजेशनल मैनेजमेंट पूरे एंटरप्राइज स्ट्रक्चर को मैप करने में प्रयोग किया जाता है। पर्सनेल प्लानिंग और एप्लीकेशन डेवलपमेंट में हेल्प करता है।

5– ईएसएस और एमएसएस

कर्मचारी स्वयं सेवा कर्मचारियों को किसी संगठन में उनके कार्यकाल के विभिन्न डेटा को व्यक्तिगत रूप से ट्रैक करने में मदद करती है। दूसरी ओर प्रबंधन स्वयं–सेवा प्रबंधकों के लिए कर्मचारियों का डेटा बनाने और बनाए रखने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। MDL में मानव संसाधन से संबंधित लगभग सारी प्रक्रियाओं को जैसे कि कार्य संपादन, दावों इत्यादि को ऑनलाइन कर दिया गया है जिससे कर्मचारियों को काफी सहूलियत हो गयी है।

6– ट्रेवल मैनेजमेंट

यात्रा प्रबंधन में आधिकारिक यात्राओं का प्रबंधन, यात्रा के लिए लागत प्रबंधन, यात्रा व्यय आदि शामिल हैं।

7– रिपोर्टिंग

रिपोर्टिंग एचआर टीम को अपने सभी कर्मचारियों की व्यापक और अद्यतित जानकारी देने की अनुमति देती है। रिपोर्टिंग टूल किसी को किसी संगठन में अनुसरण की जाने वाली पदानुक्रम संरचना को ट्रैक करने में सक्षम बनाता है।

एस.ए.पी. के लाभ

- ये किसी भी डाटा (DATA) को डुप्लीकेट (Duplicate)रिकॉर्ड नहीं होने देता है
- प्लानिंग (Planning), ट्रैकिंग (Tracking), शेड्यूलिंग (Scheduling), मैनेजमेंट (Management) काफी आसान हो जाते है
- इसके अतिरिक्त, एसएपी ईआरपी (SAP ERP) सिस्टम प्रशासन (system administration) और उपयोगकर्ता प्रबंधन, केंद्रीकृत डेटा प्रबंधन और वेब सेवाओं के प्रबंधन जैसे कार्यों के लिए उपकरण प्रदान करता है
- एसएपी ई–कॉमर्स (E-commerce) के साथ एकीकरण सक्षम करता है।
- व्यापार प्रक्रिया मानकीकृत हैं।
- प्रशासनिक शुल्क को कम करने के मामले में लागत प्रभावी है।

एस.ए.पी सफल क्यों है?

- जानकारी सुरक्षित रखता है।
- एसएपी आर / 3 बहु मुद्रा में काम करता है।
- सर्वोत्तम व्यापार प्रथाओं का पालन किया जाता है
- यह सभी इंटरप्राइजेज (enterprises) में स्वीकार किया जाता है।
- रीयलटाइम टाइम प्रोसेसिंग विशेष रूप से सर्वर / क्लाइंट एप्लिकेशन के दौरान अधिक कुशल और प्रभावी है।
- आवेदन प्रकृति में बहुभाषी है।

एस.ए.पी की कठिनाईयां

- SAP ERP सॉफ्टवेयर एक छोटी या नई कंपनी के लिए खरीदना मुश्किल होता है। बड़ी बड़ी कंपनी तो इसे आसानी से खरीद सकती है लेकिन वही छोटी कंपनी के लिए यह मुश्किल होता है।
- SAP सॉफ्टवेयर को चलाना आसान नहीं होता है। इसे चलाने के लिए कंपनी को खासतौर से ऐसे कर्मचारियों को रखना पड़ता है जो इसे चलाना जानते हो। किसी भी नए व्यक्ति के बिना जानकारी के इसे चलाना बहुत ही मुश्किल है।

चिट्ठी मेरे नाम की



प्रकाश चंद्र झा
उप महाप्रबंधक (जहाज निर्माण–कार्य)

आज डाकिया लेकर आया, एक चिट्ठी मेरे नाम की,
मोबाइल युग में चिट्ठी का आना,
मानो पत्थर पर अंकुर उग जाना,
लिखावट देखी तो जाना पहचाना,
आया याद वो गुजरा हुआ जमाना,
मन मस्ती में मचल उठा, किस्मत बदली उस शाम की,
आज डाकिया लेकर आया,एक चिट्ठी मेरे नाम की ।। 1 ।।

छूते ही चिट्ठी, हाथ मेरा काँप गया,
लिफाफा बंद,पर मैं मजमूँ भाँप गया,
कुछ आया याद, मुझको सूँघ साँप गया,
धड़कन हुई तेज,पल ही में मैं हाँफ गया,
विचलित हुआ देर थोड़ी, पडी़ जरूरत कुछ विश्राम की,
आज डाकिया लेकर आया,एक चिट्ठी मेरे नाम की ।। 2 ।।

लगा इसमें फिर, वही टूटे सपने होंगे,
कुछ उसके तो, कुछ मेरे भी अपने होंगे,
होठों पर फिर नाम, उसी के जपने होंगे,
दग्ध हृदय के ताप में, फिर से तपने होंगे,
दर्द का प्याला फिर छलकेगा,उन अधरों के रस जाम की,
आज डाकिया लेकर आया,एक चिट्ठी मेरे नाम की ।। 3 ।।

खत पढ़ते ही,ख्याल एकदम बदल गया,
समय के साथ कितना,मेरा सनम बदल गया,
जख्म तो था वही, पर मरहम बदल गया
मुदित होकर, मन का मौसम बदल गया,
खत के नीचे का स्थान रिक्त था, वह चिट्ठी थी गुमनाम की,
आज डाकिया लेकर आया, एक चिट्ठी मेरे नाम की ।। 4 ।।

द्वारा–प्रकाश चन्द्र झा



विवेक मोरे
मुख्य प्रबंधक, सतर्कता

केंद्रीय सतर्कता आयोग और प्रतिबंधात्मक सतर्कता पर संक्षिप्त में जानकारी

1. **केंद्रीय सतर्कता आयोग की संरचना कैसी है ?**

केंद्रीय सतर्कता आयोग का अपना सचिवालय, मुख्य तकनिकी परीक्षक विंग (सीटीई) और विभागीय जाँच आयुक्तों (सीडीआई) का विंग है।

I. सचिवालय : इस में एक सचिव, चार अतिरिक्त सचिव, तीस निदेशक/उप सचिव (विशेष कर्तव्य पर दो अधिकारियों सहित), चार अवर सचिव और कार्यालयीन कर्मचारी शामिल हैं।

II. मुख्य तकनीकी परीक्षक विंग (सीटीई) : मुख्य तकनीकी परीक्षक संगठन (सीटीईओ) केंद्रीय सतर्कता आयोग (भारत) के तकनीकी विंग का गठन करता है और सहायक अभियांत्रिकी कर्मचारियों के साथ मुख्य अभियंता (मुख्य तकनीकी परीक्षक के रूप में नामित) के रैंक के दो अभियंताओं द्वारा संचलित होता है। इस संगठन को सौंपे गए मुख्य कार्य निम्नुसार है :

I. सरकारी संस्थाओं के निर्माण कार्यों का सतर्कता कोण (एंगल) से तकनीकी ऑडिट, निर्माण कार्यों से संबंधित शिकायतों के विशिष्ट जाँच, तकनीकी मामलों से संबंधित और दिल्ली में संपत्तियों के मूल्यांकन के लिए सीबीआई को सहायता करना और तकनीकी मामलों से जुड़े सतर्कता मामलों में आयोग और मुख्य सतर्कता अधिकारियों को सलाह /सहायता देना।

III. विभागीय जाँच आयुक्तों (सीडीआई) : आयोग में विभागीय जाँच आयुक्त के चौदह पद है, निदेशक के पद पर 11 और उप सचिव के पद के साथ 3 पद है। सीडीआई लोकसेवकों के खिलाफ शुरू की गई विभागीय कार्यवाही में मौखिक जाँच करने के लिए जाँच अधिकारी के रूप में कार्य करते है।

2. **केंद्रीय सतर्कता आयोग के अंतर्गत कार्यरत विभाग, मंत्रालय, सार्वजानिक उपक्रम, बैंक, वित्तीय संस्था इ. में सतर्कता का कार्य कैसे होता है ?**

केंद्रीय सतर्कता आयोग का मुख्य कार्यालय आयएनए नई दिल्ली में है। लेकिन, केंद्र सरकार के अंतर्गत कार्यरत उपरोक्त विभागों में केंद्रीय सतर्कता आयोग के अनुमति से एक वरिष्ठ अधिकारी (सयुंक्त सचिव और उनके ऊपर के स्तर के) की नियुक्ति की जाती है, जिनको मुख्य सतर्कता अधिकारी कहते है और वे आयोग की विस्तारीत भुजा यानी की एक्सटेंडेड आर्म के तहत कार्य करते है एवं फील्ड यूनिट में सतर्कता विभाग का प्रतिनिधित्व करते है। इनका कार्यकाल तीन साल का होता है जो की आयोग के सहमति से ओर दो साल तक बढ़ाया जा सकता है। यह अधिकारी को खुद को और संगठन का आतंरिक दबाव अलग करने हेतु इनकी नियुक्ति दूसरे मंत्रालय या विभागों से प्रतिनियुक्ति के तौर पर की जाती है।

इसके अलावा, हर एक मंत्रालय में भी, एक वरिष्ठ अधिकारी (सयुंक्त सचिव और उनके ऊपर के स्तर के) मुख्य सतर्कता अधिकारी होते है,जिनको या तो पूर्ण समय या अंशकालीन समय पर अतिरिक्त जिम्मेदारी सौपी जाती है और वे संबंधित प्रशासकीय मंत्रालय के मुख्य सतर्कता अधिकारी कहते है।

3. **केंद्रीय सतर्कता आयोग के क्षेत्राधिकार में कौन-कौन आते हैं ?**

केंद्रीय सतर्कता आयोग अधिनियम के तहत आयोग का

अधिकार क्षेत्र निम्नुसार है

I. संघ के मामलों के संबंध में सेवारत अखिल भारतीय सेवा के सदस्य और केंद्र सरकार के समूह ए में शामिल सभी अधिकारी।

II. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में स्केल V और उससे ऊपर के रैंक के अधिकारी।

III. भारतीय रिजर्व बैंक, नाबार्ड और सिडबी में ग्रेड डी और उससे ऊपर के अधिकारी।

IV. बोर्ड के मुख्य कार्यपालक और कार्यपालक और अनुसूची ए और बी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में ई–8 और उससे ऊपर के अन्य अधिकारी।

V. बोर्ड में मुख्य कार्यपालक और कार्यपालक और अनुसूची सी और डी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में ई–7 और उससे ऊपर के अन्य अधिकारी।

VI. सार्वजनिक बीमा कंपनियों में प्रबंधक और उससे ऊपर के अधिकारी।

VII. जीवन बीमा निगमों में वरिष्ठ मंडल प्रबंधक और उससे ऊपर के अधिकारी।

VIII. आज के तारीख में जारी अधिसूचना के अनुसार और जो समय–समय पर समितियों (सोसायटीज) और अन्य स्थानीय प्राधिकरणों (लोकल अथॉरिटीज) में संशोधित किया जाता है और जो केंद्र सरकार के डी.ए. पैटर्न के अनुसार रु.8700/– प्रतिमाह वेतन पाने वाले अधिकारी ऐसे सभी अधिकारी।

4. **प्रतिबंधात्मक सतर्कता क्या है ?**

यह भ्रष्टाचार को खत्म करने/कम करने,पारदर्शिता को बढ़ावा देने और व्यापार को आसान बनाने के लिए प्रणालियों और प्रक्रियाओं में सुधार के उपायों के एक पैकेज को अपनाना है।

5. आप अपने संस्थान में प्रतिबंधात्मक सतर्कता से संबंधित क्या कदम उठाए हैं ?

हमारे संस्थान में प्रतिबंधात्मक सतर्कता से सम्बंधित निम्नलिखित कदम उठाए हैं :

I. सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को उनके संम्पति के विवरण हर साल के माहे जनवरी में संबंधित मानव संसाधन विभाग में प्रस्तुत करने पड़ते है। इस संम्पति विवरण की सतर्कता विभाग द्वारा जाँच की जाती है। ऐसा करके बेनामी ट्रांसएक्शन,आय से एसेट की वैल्यू जादा होना जिसको डिसप्रोपोर्शनेट एसेट कहा जाता है,अधिकारी और कर्मचारियों के चल और अचल संपत्ति के लिए लागु अधिनियम के अनुसार उसका अनुपालन किया है नहीं इस बारे में जाँच करना और अनुपालन न करने वाले अधिकारी एवं कर्मचारियों को उचित सलाह देने का कार्य किया जाता है।

II. सतर्कता विभाग में प्राप्त बेनामी या दुसरो के नाम से दर्ज शिकायतों में से, जिसमे शामिल आरोपों में से सत्यापन योग्य तथ्यता हो, ऐसे एवं स्त्रोत जानकारी से तथा ऑडिट अहवाल का अध्ययन करने के पश्चात, सतर्कता विभाग सरप्राइज जाँच करता है।

III. प्रतिबंधात्मक –सतर्कता के ऊपर आतंरिक एवं बाह्य विशेषज्ञ के द्वारा अधिकारी, कर्मचारी, प्रशिक्षु प्रशिक्षणार्थी के लिए निरंतर प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता है।

IV. संवेदनशील विभागों की सूचि अद्यावत की जाती है और इन विभागों में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारियों का, केंद्रीय सतर्कता आयोग से जारी अद्यावत नियमावली के अनुसार, समय समय पर स्थानांतरण किया जाता है।

V. संगठन के खरीदी मैन्युअल, नियमावली का विश्लेषण किया जाता है।

VI. जारी प्रक्रिया में जटिलताओं की पहचान की जाती है और उसमे सुझाव दिए जाते है।

VII. संगठन के प्रमुख, मुख्य सतर्कता अधिकारी और केन्द्रीय जाँच बुरो इनके सहमती से एग्रीड लिस्ट (सहमत सूचि) और सत्यनिष्ठा में संदिग्धता पाए जानेवाले अधिकारी (डाउटफुल इंटीग्रिटी) की सूचि बनाई जाती है।



श्रीनिवास सिन्हा
अपर महाप्रबंधक (मासं एवं राभा)

विश्वभाषा के रुप में हिंदी

'विश्वभाषा' विश्व की उस प्रत्येक भाषा को कहा जा सकता है, जिसके प्रयोक्ता एकाधिक देशों में बसे हुए हैं, किंतु 'विश्वभाषा' पद की वास्तविक अधिकारिणी वे भाषाएँ भी हैं, जो विश्व के अधिकतर देशों में पढ़ी, लिखी, बोली, सुनी और समझी जाती हैं। वस्तुतः प्रत्येक 'विश्वभाषा' के पांच प्रमुख कार्य होते हैं–1. बोलचाल एवं जनसंपर्क, 2. साहित्य–सृजन, 3. शिक्षण एवं जनसंचार माध्यम, 4. प्रशासनिक कामकाज (राजकाल) और 5. व्यावसायिक और तकनीकी अनुप्रयोग।

'विश्वभाषा' की उपाधि देने के पूर्व यह देखना होगा कि प्रश्नगत भाषा विभिन्न देशों में इन प्रकार्यों की पूर्ति कहाँ तक कर रही है?

'विश्वभाषा' की अवधारणा से जुड़ा हुआ एक और महत्वपूर्ण मुद्दा है। वह मुद्दा है–विश्वबोध या वैश्विक चेतना का। सही अर्थों में 'विश्वभाषा' उसे ही कहा जा सकता है, जिसका चिंतन क्षेत्रीय परिधि को लाँघ गया हो, जो राष्ट्र की सीमा का भी अतिक्रमण कर गया हो और समग्रतः विश्वमानव की चेतना में रूपांतरित हो रहा हो। यह तभी संभव हो पाता है, जब भाषा अपने क्षेत्र, वर्ग, जाति आदि के सामुदायिक चरित्र से ऊपर उठ जाती है।

1. हिंदी की विश्व-व्याप्ति - 'यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार संप्रति विश्व के लगभग 137 देशों में हिंदी भाषा विद्यमान है। हिंदी भाषियों की कुल संख्या अनुमानतः सत्तर करोड़ है। इनमें तीन प्रकार के राष्ट्र हैं–

(अ) भारत के प्रतिवेशी राष्ट्र, जैसे–नेपाल, सिंगापुर, बर्मा, म्याँमार, थाईलैंड, मलेशिया, तिब्बत, भूटान, इंडोनेशिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मालद्विप आदि। इन देशों में से अनेक राष्ट्र पहले बृहत्तर भारत के अंग थे। यहाँ हिंदीभाषी परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी निवास कर रहे हैं। नेपाल मूलतः हिंदू देश है। वहाँ की भाषाएँ–नेपाली, गोरखी मुख्यतः हिंदी की ही विभाषाएँ हैं। पृथकतावादी राजनीति के कारण भारत–विरोध के नाम पर वहाँ हिंदी–विरोध की जो हवा चली, उससे स्थानीय भाषाओं की बढ़त और हिंदी की कुछ क्षति हुई है, अन्यथा हिंदी–सेवा का सुदीर्घ इतिहास नेपाल से संबद्ध है। वहाँ के रचनाकारों में श्री देवकोटा, मोतीराम, लखाराम, गिरीश बल्लभ, रघुनाथ आदि का योगदान अविस्मरणीय है। नेपाल में दैनिक समाचार–पत्र और अनेक साहित्यिक पत्र–पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हुई हैं और हो रही हैं। कुछ ऐसी ही स्थिति बर्मा और भूटान की है। पाकिस्तान और बांग्लादेश में जो उर्दू और बँगला प्रचलित हैं, वे यदि देवनागरी में लिख दी जाएँ तो हिंदी से बहुत भिन्न नहीं होंगी। यही स्थिति जावा, सुमात्रा और इंडोनेशिया की है। वहाँ के मुसलमान जिस उर्दू का प्रयोग करते हैं, वह लिप्यंतरण के बाद हिंदी जैसी लगती है।

(ब) हिंदीभाषी विश्व का दूसरा वर्ग है– भारत मूल के भारतवंशी–बहुत से राष्ट्र हैं जिन्हें 'भारत उपमहाद्वीप' कहा जा सकता है। इनमें प्रमुख मॉरिशस, फीजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद और गुयाना देश है। इन देशों में लगभग डेढ़ सौ वर्षों से हिंदी विद्यमान है। अंग्रेजों ने इन द्वीपों में भारतीय गिरमिटिया (एग्रीमेंट) मजदूरों को जा बसाया था। प्रवजन का क्रम सदियों तक जारी रहा। धीरे–धीरे ये देश सरसब्ज हो गए। वहाँ आदिम जनों के साथ कुछ अन्य देशों के

प्रवासी भी आ बसे। किंतु फिर भी वहाँ भारतीयों की संख्या सर्वाधिक रही। मॉरिशस में ५२ प्रतिशत से भी अधिक भारतीय वंशज हैं। ये अधिकांशत: हिंदीभाषी हैं। 1907 में जब डॉ. मणिलाल मॉरिशस की यात्रा पर गए तो वहाँ के शोषित भारतीयों में नवस्फूर्ति का संचार हुआ और उन्होंने सुनियोजित रूप से अपनी संस्कृति का सर्वांग विकास करते हुए हिंदी माध्यम से विद्यालय खोले, कई संस्थाएँ स्थापित कीं, हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ शुरू कीं और हिंदी पठन-पाठन तथा परीक्षण की व्यवस्था कराई।

(क) विश्व के समुचित राष्ट्रों के हिंदी आप्रवासी-संप्रति हिंदी भाषी समाज, यूरोप, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, खाड़ी देशों, अफ्रीका आदि के विभिन्न विकसित राष्ट्रों में फैला हुआ है। ब्रिटेन में भारतीयों की कई कॉलोनियाँ हैं। अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, इटली, रूस, स्वीडन, नॉर्वे, हॉलैंड, पोलैंड, जर्मनी, सऊदी अरब, नीदरलैंड आदि देशों में भी पर्याप्त मात्रा में हिंदी भाषी निवास कर रहे हैं। हिंदी से इन देशों का संबंध कई वर्षों से है। फ्रांस के विद्वान गार्सा द ताँसी ने सन 1939 में 'हिंदुस्तानी का इतिहास' लिखा था। आयरलैंड निवासी डॉ. ग्रियर्सन ने 1889 में हिंदी विषयक शोध-कार्य करके विश्व-स्तर पर इस भाषा की पहचान बनाई थी। इन दिनों यूरोप, अमेरिका के 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है, क्योंकि वे भारत की भाषा के रूप में मुख्यत: हिंदी को मान्यता देते हैं। वहाँ जनसंचार में भी हिंदी को स्थान मिला है।

2. हिंदी भाषा में विश्व-बोध - विश्वभाषा बनने की अनिवार्य शर्त है-वैश्विक चेतना का संस्पर्श। हिंदी विश्व मानव के विचार-विनिमय का माध्यम रही है। भारतीय संस्कृति के विश्व बंधुत्व की विरासत उसे संस्कृत से मिली है। हिंदी के प्राचीन, अर्वाचीन समस्त साहित्य में भवसागर अर्थात लोकजीवन की भरमार है। यह परंपरा आज तक विद्यमान है। यह देश ब्रिटिश उपनिवेशवाद का सुदृढ़ अंग रहा है और विश्व की विशिष्ट विभूतियों, घटनाओं तथा प्रसिद्ध प्राकृतिक स्थलों के प्रति सजग रहा है। भारतेंदु युग से यह क्रम निरंतर बरकरार है। भारतेंदु जी ने रानी विक्टोरिया और राजकुमार के अभिनंदनस्वरूप अनेक रचनाएँ लिखी थीं। शेक्सपियर के नाटकों के अनुवाद भी उन्होंने किए थे, जिनमें 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' प्रथमत: उल्लेखनीय है। उनके युग के और कई कवि-लेखक इस दिशा में सक्रिय थे। श्रीधर पाठक कृत 'ऊजड़ गाँव और एकांतवासी योगी' जैसी अनूदित कृतियाँ आज भी विशिष्ट कही जाएँगी। विदेशी भाषाओं की कालजयी कृतियों के रूपांतर का क्रम द्विवेदी युग, छायावाद और प्रगति-प्रयोग काल में भी चलता रहा। इस बीच मिल्टन, शेक्सपियर, टेनीसन, किट्स, शेली, वडर्सवर्थ, गोर्की, हार्डी, डिकेंस, रिचडर्स, मार्क्स, इलियट, सार्त्र, टॉल्सटॉय, बर्नार्ड शॉ आदि के कई हिंदी अनुवाद प्रकाश में आए। दूसरी ओर रामचरितमानस, कबीर, सूर, मीरा और अष्टछायी कवियों के अनेक पद विश्वभाषाओं में रूपांतरित हुए। प्रसाद जी ने 'कार्नेलिया (चंद्रगुप्त), 'शैला (तितली) जैसे चरित्र गढे। निराला ने सम्राट एडवर्ड अष्टम को संवेदना अर्पित की, पंत ने 'लोकायतन' की परिकल्पना प्रस्तुत की। प्रेमचंद्र, राहुल, दिनकर, अज्ञेय, बच्चन, भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, उषा प्रियंवदा, कुँवरनारायण आदि ने विश्वबोध का आहवान किया। तात्पर्य यह है कि पारस्परिक आदान-प्रदान के कारण हिंदी वैश्विक चेतना से जुड़ी रही और उसका विश्व-बोध तीव्र से तीव्रतर होता रहा।

विश्वभाषा के रूप में हिंदी के समक्ष अभी कई समस्याएँ हैं; जैसे-

1. विदेशों में जिस अनुपात में भारतीय/हिंदू संस्कृति का ह्रास और पश्चिमी भोगवादी सभ्यता का विकास होता चला जा रहा है, उसी मात्रा में हिंदी का प्रचलन न्यून होता जा रहा है। यह भाषा टिकी हुई है-भारत से प्रव्रजन-पलायन करने वाले युवा बुद्धिजीवियों और श्रमिकों पर, किंतु वे बड़ी तेजी से पश्चिमी रंग में रँगते जा रहे हैं। उनकी अगली पीढ़ी हिंदी से अपरिचित-सी है। अब वे भारतीयता

की रक्षा और अपनी अस्मिता के लिए हिंदी से जुड़ रहे हैं।

2. अंग्रेजी के प्रचार–प्रसार में मिशनरी संस्थाएँ, नवीनतम संसाधनों के साथ सक्रिय हैं, जबकि हिंदी अपने देशी सियासती षडयंत्र से आक्रांत है और साथ ही विदेशी, भारत–विरोधी अभिसंधियों से पीड़ित भी।

3. हिंदी के पास आधुनिक टेक्नोलॉजी का अभाव है। अभी तो वह प्राय: पर्यटकों और व्यापारियों की कामकाजी भाषा है। इस दिशा में हमारे दूतावास भी पूर्ण सचेष्ट नहीं हैं। हिंदी के संपूर्ण उत्थान के लिए इस योजनाबद्ध अनुष्ठान की आवश्यकता है–

(1) विदेशों में कंप्यूटरीकृत हिंदी मुद्रण–टंकण, आशुलेखन की ऑनलाइन सुविधा का विस्तार।

(2) हिंदी की कालजयी कृतियों का विनिश्चय करके विभिन्न भाषाओं में उनके रूपांतरण की व्यवस्था की।

(3) विदेशों में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं और पुस्तकों का प्रकाशन तथा उनका सुलभ बिक्री–वितरण।

(4) भारतवंशी–बहुल राष्ट्रों में हिंदी संस्थाओं का संचालन।

(5) विदेशों में प्रतिवर्ष विश्व हिंदी–सम्मेलनों तथा अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन।

(6) विश्व के प्रमुख नगरों में हिंदी पुस्तकालयों, संग्रहालयों और सूचना केंद्रों की स्थापना।

(7) विश्वस्तरीय हिंदी कवि–लेखकों के परिचय कोशों का नियमित आवधिक प्रकाशन।

(8) हिंदी पठन–पाठन और प्रशिक्षण से संबंधित संस्थाओं का सक्रिय संचालन।

(9) विश्वभाषाओं से संबंधित द्विभाषी, त्रिभाषी और बहुभाषी शब्दकोशों, विश्वकोशों का संपादन और प्रकाशन।

(10) 'स्मार्ट भाषा के संक्षिप्ताक्षरों, हिंदी कूटपदों तथा संकेताक्षरों का प्रचलन।

(11) उपग्रहों, रेडियो और टी.वी. के उपयुक्त 'संचार–भाषा का अधिकाधिक प्रसारण।

(12) हिंदी की विश्वभाषायी प्रकृति की रूप–रचना, व्याकरण का नवनिर्माण, लिपि का सरलीकरण और व्यवहार।

(13) हिंदी शोध–केंद्रों की स्थापना।

(14) हिंदी प्रतियोगिता, अनुदान, वृत्ति, पुरस्कार आदि के प्रावधान।

(15) उपर्युक्त सूत्रों के कार्यान्वयन हेतु 'विश्व हिंदी पीठ' की सक्रियता में वृद्धि।

हिंदी संसार के दर्जनों देशों में बोली जा रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ में वह अभी भले न आ पाई हो, किंतु देशांतर में रहने वाले करोड़ों भारतीयों की प्रिय भाषा तो वह है ही। सत्तर करोड़ हिंदीभाषी होने के कारण इसे विश्वभाषा का रूप देना ही होगा। इसके लिए आवश्यक है कि हिंदी में वैश्विक चेतना अधिकाधिक लायी जाए और विदेशियों के हिंदी शिक्षण की योजनाएँ लागू की जाएँ। हम देश में हिंदी पाठ्यक्रम चलाकर, विश्व हिंदी विशेषांक निकालकर, विदेशी विद्वानों के व्याख्यानों का निरंतर आयोजन करवाकर और विदेशी विश्वविद्यालयों के हिंदी छात्रों को हिंदी का मॉडल प्रशिक्षण देकर इस दिशा में सार्थक प्रयास कर सकते हैं।

विश्वभाषा का तात्पर्य है–वह भाषा, जो विश्व के कई देशों में व्यवहृत होती है, जैसे–अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, जर्मन आदि। हिंदी को भी इस श्रेणी में रखा जा सकता है, क्योंकि यह हिंदुस्तान के अतिरिक्त अन्य कई राष्ट्रों में पाई जाती है। हिंदी की वैश्विक प्रतिष्ठा संप्रति आप्रवासी भारतीयों के कारण उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। भारत का जनसंख्या–विस्फोट, बढ़ती हुई बेरोजगारी, विदेशों में घटती जनसंख्या, जीविका के बेहतर अवसर आदि अनेक

कारण हैं, जिनसे भारतीयों का पलायन या प्रवजन पिछले दशकों में बढ़ा है। विभिन्न अवरोधों के बावजूद यह निरंतर बढ़ता रहेगा, इसलिए कि पश्चिमी देशों की अपनी विवशता है। वहाँ जन्म-दर शून्य प्रतिशत पर पहुँच गई है और मानव संसाधन का संकट उपस्थित हो गया है। सत्य यह है कि हर कार्य मशीनों के ही सहारे संभव नहीं है, इसलिए पश्चिमी देशों के निवासी अब आप्रवासी भारतीयों के स्वागत हेतु मजबूर हैं। ये आप्रवासी भारतीय हिंदी भाषी होने के साथ-साथ पंजाबी, गुजराती, केरला और तमिल भाषी भी हैं, किंतु विदेश में ये सब हिंदीभाषी ही माने जाते हैं। भारत में चाहे जितना भाषा-भेद हो, भारत के बाहर हम हिंदीमय हो जाते हैं। हिंदी वहाँ भारतीयता का पर्याय है।

विदेशी हिंदी को लेकर मुख्यत: संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी के प्रवेश पर लोग यह तर्क देते हैं कि पहले पूर्णरूपेण अपने देश का तो हिंदीकरण कीजिए, तब विदेशों तक पैर पसारने का सपना देखिए। इस तर्क में आंशिक सच्चाई है। हम हर क्षेत्र में स्वदेशी विकास के साथ-साथ विदेशी विकास की योजनाएँ चला रहे हैं। भारत एक ओर समृद्ध राष्ट्रों से सहायता लेता है, दूसरी ओर दुर्बल राष्ट्रों की सहायता करता भी है। ये दोनों कार्य समानांतर चलते रहते हैं। विदेशों में हिंदी की स्थिति गंभीर चिंता का विषय है। मॉरिशस, सूरीनाम, फिजी आदि भारतवंशी-बहुल राष्ट्रों में नई पीढ़ी बड़ी तेजी से अंग्रेजी-फ्रेंच की ओर बढ़ रही है। गुयाना अंग्रेजीमय हो गया है। कहीं-कहीं घरों में बोलचाल के तौर पर यहाँ लोग भोजपुरी-अवधी बोल लेते हैं, यों प्रशासन में, दैनिक व्यवहार में हिंदी मात्र पुरानी पीढ़ी के मध्य ही प्रचलित दिखाई देती है।

विदेशों में हिंदी-प्रयोग की स्थिति प्रतीकात्मक है। आवश्यकता यह है कि विदेशों में हिंदी प्रचार केंद्र स्थापित किए जाएँ। वहाँ मानक हिंदी व्याकरण के कैसेट और पाठ्य-पुस्तकें भेजी जाएँ। अधिकाधिक हिंदी फिल्मों का प्रदर्शन हो, लोकप्रिय पत्रिकाएँ प्रसारित की जाएं और हिंदी शिक्षण की नि:शुल्क व्यवस्था सुनिश्चित की जाएं, ताकि मानक उच्चारण तथा मानक वर्तनी का वैज्ञानिक उपकरणों के सहारे अभ्यास कराया जा सके।

इस सबके लिए देशांतर हिंदी का एक आयोग गठित किया जाना उपयोगी होगा। मात्र सांस्कृतिक संबंध विस्तार परिषद् पर्याप्त नहीं है। हमारा दृढ विश्वास है कि हिंदी भाषा में एक विशिष्ट प्रकार की संक्रमणशील संवेदना है।

भूमंडलीकरण के दौर में यह अवश्यभावी था। इस पश्चिमीकरण-अंग्रेजीकरण से हिंदी प्रचार प्रभावित हुआ है। उसकी संरक्षा तथा संवृद्धि के लिए जरूरी है कि उसे रोजगारोन्मुख बनाया जाए और भाषा प्रौद्योगिकी से भरसक जोड़ दिया जाए। निष्कर्ष यह है कि विश्वस्तर पर आठ प्रकार की हिंदी हैं। मानक हिंदी है भारत की। न्यूनाधिक परिवर्तन के साथ गणनीय हैं - फिजियन हिंदी, सुरिनामी हिंदी, त्रिनी हिंदी, मॉरिशस की क्रिओल, नेपाली हिंदी, जर्मनी की रोमनी हिंदी, ताजिकी हिंदी। इनकी सही जानकारी के लिए संदर्भ ग्रंथ, शब्दकोश, व्याकरण ग्रंथ, अनुवाद, इतिहास ग्रंथ तथा तुलनात्मक विश्लेषण की आवश्यकता है। मैं 1987 से 'विश्व हिंदी' को एक अनुशासन के रूप में विकसित करने हेतु भरसक तत्पर हूँ। संभावना यह है कि सुरक्षा परिषद् का स्थायी सदस्य बन जाने के बाद भारत की इस भाषा को संयुक्त राष्ट्र की भाषा की मान्यता मिल जाए। हाँ, इसकी भाषिक एवं साहित्यिक पहचान हेतु हमें हिंदी का अधिक प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है।



पी. डी. सिद्दीकी
उप प्रबंधक (राजभाषा)

आत्मनिर्भर भारत

आत्मनिर्भर भारत देश में अर्थव्यवस्था की दृष्टि से और अर्थव्यवस्था विकास के संबंध में भारत के प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी और भारत सरकार द्वारा एक लोकप्रिय वाक्यांश है। इस संदर्भ में, इस शब्द का उपयोग भारत को विश्व अर्थव्यवस्था का एक बड़ा और अधिक शामिल हिस्सा बनाने, कुशल, प्रतिस्पर्धी और लचीला नीतियों का पालन करने, इक्विटी को प्रोत्साहित करने, और स्व–उत्पादक होने के संबंध में एक छत्र अवधारणा के रूप में प्रयोग किया जाता है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैश्वीकरण का बहिष्कार नहीं किया जाएगा अपितु दुनिया के विकास में मदद की जाएगी।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के कल्याण के लिए घोषणाएँ की गईं और गरीबों, श्रमिकों और किसानों के लिए अनेक घोषणाएँ की गईं।

प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रीय सुरक्षा में आत्मनिर्भरता के लिए रक्षा निर्माण के संबंध में जून 2014 में आत्मनिर्भरता शब्द का प्रयोग किया था। इसके बाद अगस्त 2014 में उन्होंने आत्मनिर्भरता को डिजिटल इंडिया से जोड़ा। सितंबर 2014 में गरीबों को आत्मनिर्भर बनाने के बारे में बताया। आत्मनिर्भर भारत अभियान के पाँच स्तम्भ – अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढाँचा, प्रौद्योगिकी, जनसंख्यिकी (डेमोग्राफी), माँग।

इतिहास

भारत ने अपने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, स्वराज के लिए राजनीतिक आत्मनिर्भरता के तरफ बढ़ाव देखा। महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे उस समय के विचारकों ने भी न केवल एक राष्ट्र के संदर्भ में, बल्कि स्वयं के संदर्भ में भी आत्मनिर्भरता की व्याख्या की। इसमें एक व्यक्ति का अनुशासन और एक समाज के मूल्य शामिल थे। एम एस स्वामीनाथन लिखते हैं कि उनकी युवावस्था में, 1930 के दशक के भारत में अधिकांश अन्य लोगों की तरह, आदर्शवाद और राष्ट्रवाद का दौर था। युवा और बड़ों ने एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर भारत के सपने को साझा किया। पूर्ण स्वराज (पूर्ण स्वतंत्रता) और स्वदेशी (आत्मनिर्भरता) हमारे लक्ष्य थे...।

आत्मनिर्भर भारत

भारत में कोरोना वायरस महामारी की पृष्ठभूमि में, महामारी प्रेरित लॉकडाउन और घरेलू अर्थव्यवस्था के विकास में पहले से मौजूद मंदी और महामारी के आर्थिक प्रभाव के कारण, सरकार आत्मनिर्भरता के एक अनुकूलित विचार को लेकर सामने आई। 1960-70 के दशक में भारत ने आत्मनिर्भरता की कोशिश की और यह कारगर नहीं हुआ। अनुकूलित आत्मनिर्भरता जो उभरी, वैश्वीकृत दुनिया के साथ जुड़ने और चुनौती देने के लिए तैयार थी, वह पिछले दशकों के स्वतंत्रता पूर्व स्वदेशी आंदोलन से विपरीत थी। हालाँकि, स्वदेशी को भी वोकल फॉर लोकल जैसे नारों के साथ रूपांतरित किया गया है, साथ ही साथ वैश्विक अंतर्संबंध को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार का उद्देश्य

घरेलू बाजार में आयात को कम करना है, लेकिन साथ ही साथ अर्थव्यवस्था को खोलना और दुनिया के बाकी हिस्सों में निर्यात करना है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग

सरकार ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों (एमएसएमई) को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए इसकी परिभाषा में संशोधन किया है। सूक्ष्म या माइक्रो इकाई में निवेश की ऊपरी सीमा 1 करोड़ रुपये और टर्नओवर 5 करोड़ रुपये होना चाहिए। लघु इकाई में निवेश की ऊपरी सीमा 10 करोड़ रुपये और टर्नओवर 50 करोड़ रुपये होना चाहिए। मध्यम इकाई में निवेश की ऊपरी सीमा 50 करोड़ रुपये और 250 करोड़ का टर्नओवर होना चाहिए। संकटग्रस्त एमएसएमई के लिए 20 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया, इससे 2 लाख एमएसएमई को मदद मिलेगी।

सरकार ज्ञातव्य है कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। 6 करोड़ से अधिक एमएसएमई जीडीपी में 29 प्रतिशत और निर्यात में लगभग 50 प्रतिशत योगदान करते हैं। इस क्षेत्र में 11 करोड़ से ज्यादा लोगों को रोजगार मिला हुआ है।

मेक इन इण्डिया को प्रोत्साहन

प्रधानमंत्री मोदी ने 4 जुलाई, 2020 को ऐप के मामले में आत्मनिर्भर बनने के लिए ऐप इनोवेशन चैलेंज लॉन्च किया। एप इनोवेशन चैलेंज का मंत्र है 'भारत में भारत और विश्व के लिए बनाओ (मेक इन इण्डिया फॉर इण्डिया एण्ड द वर्ल्ड)।

भारत आज पीपीई किट का विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक बन गया है। सीएसआईआर–एनएएल ने 35 दिनों के भीतर बाईपैप वेण्टिलेटर का विकास किया। बिजली क्षेत्र में ट्रांसमिशन लाइन टॉवर से लेकर, ट्रांसफार्मर और इन्सुलेटर तक देश में ही बनाने पर जोर दिया गया है। सभी सेवाओं सरकारी खरीद व अन्य के लिए 'मेक इन इण्डिया' नीति में संशोधन किया गया है। रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता के लिए 'मेक इन इण्डिया' को बढ़ावा दिया गया। आयातित पुर्जों का स्वदेशीकरण किया जाएगा और इसके लिए अलग से बजट का प्रावधान किया जाएगा। आयुध निर्माणियों (ऑर्डनेंस फैक्ट्रियों) को कॉर्पोरेट का दर्जा दिया जाएगा और उनको शेयर बाजार में सूचीबद्ध किया जाएगा।

प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना

भारत में कोरोना महामारी से लॉकडाउन के कारण नाई की दुकानें, मोची, पान की दुकानें व कपड़े धोने की दूकानें, रेहड़ी–पटरी वालों की आजीविका पर सबसे ज्यादा असर पड़ा है। इस समस्या को ख़त्म करने के लिए प्रधानमंत्री के द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत एक नई योजना की घोषणा की है जिसका नाम है पीएम स्वनिधि योजना। इस योजना के अंतर्गत रेहड़ी पटरी वालों को सरकार द्वारा 10,000 रूपये का ऋण मुहैया कराया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत दी जा रही अल्पकालिक सहायता 10,000 रुपये छोटे सड़क विक्रेताओं को अपना काम फिर से शुरू करने में सक्षम बनाएंगे। इस योजना के ज़रिये भी आत्मनिर्भर भारत अभियान को गति मिलेगी।

गरीबों, श्रमिकों और किसानों के लिए की गई मुख्य घोषणाएँ

आत्मनिर्भर भारत अभियान के अन्तर्गत मुख्यत: गरीब, श्रमिक और किसानों के लिए जो घोषणाएँ की गई हैं, वह निम्नलिखित हैं–

- किसानों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष सहायता प्रदान करने की कोविड–19 पश्चात योजना।

- पिछले 2 महीनों के दौरान प्रवासी और शहरी गरीबों के लिए सहायता योजना।
- श्रम संहिता में बदलाव करके श्रमिकों के लिए लाभ सुनिश्चित करना।
- 2 महीने के लिए प्रवासियों को मुफ्त भोजन की आपूर्ति।
- एक देश एक राशन कार्ड द्वारा भारत में किसी भी उचित मूल्य की दुकान से सार्वजनिक वितरण प्रणाली का उपयोग करने के लिए प्रवासियों को सक्षम।
- किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से ढाई करोड़ किसानों को ऋण को बढ़ावा देने के लिए 2 लाख रुपये दिए जाएंगे।
- 500 करोड़ रुपये के सभी फलों और सब्जियों को कवर करने के लिए ऑपरेशन ग्रीन का विस्तार किया जाएगा।
- अनाज, खाद्य तेल, तिलहन, दालें, प्याज और आलू जैसे आवश्यक भोजन में संशोधन लाया जाएगा।
- तेरह, किसानों की आय दोगुनी करने के लिए 11 घोषणाएँ घोषित की गई हैं।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के अन्तर्गत केंद्र सरकार द्वारा देश के किसानों की आय को दोगुना करने के लिए मुख्यत: योजनाएं घोषणा की गई है।

1. कृषि अवसंरचना की स्थापना के लिए 11 लाख करोड़ रुपये का कोष निर्माण करना।

2. सूक्ष्म खाद्य उद्यमों के औपचारिककरण के उद्देश्य से नई योजना के लिए 10 हजार करोड़ दिए जा रहे हैं।

3. प्रधानमंत्री मातृ सम्पदा योजना के तहत मछुआरों के लिए 2 हजार करोड़ रुपये आवंटित किए जाएँगे।

4. पशुपालन के बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए 15 हजार करोड़ रुपये का सेटअप किया जाएगा।

5. केंद्र सरकार जड़ी–बूटियों की खेती के लिए 4 हजार करोड़ रुपये आवंटित करेगी।

6. मधुमक्खी पालन की पहल के लिए 500 करोड़ रुपये अलग आवंटित किए जाएँगे।

7. 500 करोड़ रुपये के सभी फलों और सब्जियों को कवर करने के लिए ऑपरेशन ग्रीन का विस्तार किया जाएगा।

8. कृषि विपणन सुधारों को एक नए कानून के माध्यम से लागू किया जाएगा जो अंतरराज्यीय व्यापार के लिए बाधाओं को दूर करेगा।

9. किसान को सुविधात्मक कृषि उपज के माध्यम से मूल्य और गुणवत्ता आश्वासन दिया जाएगा।

आत्मनिर्भर भारत अभियान का लाभ देश के गरीब नागरिक, श्रमिक, प्रवासी मजदूर, पशुपालक, मछुआरे, किसान, संगठित क्षेत्र व असंगठित क्षेत्र के व्यक्ति, काश्तकार, कुटीर उद्योग, लघु उद्योग, मध्यमवर्गीय उद्योग को मिलेगा। जिससे 10 करोड़ मजदूरों को लाभ होगा, एमएसएमई से जुड़े 11 करोड़ कर्मचारियों उद्योग से जुड़े 3.8 करोड़ लोगों को और साथ ही वस्त्र उद्योग से जुड़े साढे.चार करोड़ कर्मचारियों को लाभ पहुँचेगा।

महिलाओं एवं बच्चों के प्रति साईबर अपराध निवारण



सुश्री जयंतिका मुखर्जी
वरिष्ठ अनुवादक

गृह मंत्रालय ने देश में साइबर अपराध से निपटने के लिए और महिलाओं एवं बच्चों के प्रति अपराध निवारण के लिए प्रभावी उपाय करने हेतु उपयुक्त सिफारिशें करने तथा समाज में इन मुद्दों के बारे में जागरुकता पैदा करने के लिए एक विशेषज्ञ समूह का गठन किया था, जिसमें एन.एस.सी.एस., गृह मंत्रालय, सीडैक, सर्ट–इन, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय विज्ञान संस्थान और सूचना प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ शामिल थे। तदनुसार, गृह मंत्रालय द्वारा महिलाओं और बच्चों के प्रति साइबर अपराध के निवारण के लिए योजना तैयार की गई है।

II. सीसीपीडब्ल्यूसी योजना के घटक

1. ऑनलाइन साइबर क्राइम रिपोर्टिंग यूनिट
2. फोरेंसिक यूनिट
3. क्षमता संवर्धन यूनिट
4. अनुसंधान एवं विकास यूनिट
5. जागरूकता संवर्धन यूनिट

1 ऑनलाइन साइबर क्राइम रिपोर्टिंग यूनिट

- ऑनलाइन साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल सीसीपीडब्ल्यूसी परियोजना का केन्द्रीय नागरिक पोर्टल है। इस पोर्टल के माध्यम से साइबर अपराध के पीड़ितों द्वारा साइबर अपराध की ऑनलाइन शिकायत की जा सकती है।
- यह इस प्रकार के सभी अपराधों के लिए केन्द्रीय संग्रह का कार्य करता है जोकि साइबर अपराध, उनकी प्रवृत्ति तथा निवारक उपायों इत्यादि के संबंध में वार्षिक विश्लेषणात्मक रिपोर्ट प्रकाशित करने में इसका प्रयोग किया जाता है।
- साथ ही, यह इकाई साइबर अपराध से संबंधित सूचना के लिए राष्ट्रीय, राज्य तथा स्थानीय स्तर पर विधि प्रर्वतन तथा नियामक एजेंसियों के लिए संदर्भ हेतु केन्द्रीय रिपोजिटरी मुहैया कराती है।
- यह ईकाई ऑनलाइन साइबर अपराध रिपोर्टिंग प्लेटफॉर्म के विकास, साइबर अपराध की प्रवृत्तियों पर आवधिक विश्लेषणात्मक रिपोर्टें जारी करने, नागरिकों द्वारा दर्ज ऑनलाइन शिकायतों के निपटान के लिए प्रक्रिया को परिभाषित करने के लिए उत्तरदायी है। साथ ही, इन शिकायतों को राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के क्षेत्राधिकार के आधार पर समुचित विधि प्रर्वतन एजेंसियों को सौंपने अथवा आपराधिक जांच के क्षेत्राधिकार वाली किसी अन्य केन्द्रीय एजेंसी को सौंपने के लिए उत्तरदायी है।
- यह ईकाई केन्द्र तथा निर्दिष्ट राज्य फोरेंसिक प्रयोगशालाओं में सभी डिजिटल जांचों के लिए फोरेंसिक यूनिटों के साथ मिलकर कार्य करेगी।

2. फोरेंसिक ईकाई

- साइबर अपराध से संबंधित साक्ष्यों को समुचित रूप से एकत्र करने और उनका संग्रह करने तथा सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम तथा साक्ष्यों अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार उनका विश्लेषण करना अत्यंत आवश्यक है।
- राष्ट्रीय साइबर फोरेंसिक प्रयोगशाला 24*7*365 आधार पर कार्य करेगी। इसमें सभी नवीनतम फोरेंसिक उपकरण होंगे जिनका प्रयोग जब भी जरूरत हो सभी केन्द्रीय/राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के साथ–साथ केन्द्रीय/राज्य फोरेंसिक प्रयोगशालाएं कर सकती हैं।

- इस ईकाई में साइबर सुरक्षा पेशेवर की टीम होगी जो सुस्पष्ट इलेक्ट्रोनिक फोरेंसिक विश्लेषण करने तथा देशभर में विधि प्रर्वतन एजेंसियों को इलेक्ट्रोनिक फोरेंसिक विश्लेषण में सहायता प्रदान करेंगे।
- यह प्रयोगशाला सभी गहन तथा उन्नत स्तर के फोरेंसिक विश्लेंषण करेगी।

3. क्षमता संवर्धन यूनिट

- यह ईकाई पहचान, जांच, फोरेंसिक इत्यादि जैसी अपेक्षित क्षमताओं के लिए केन्द्र तथा राज्य पुलिस बलों, अभियोजकों, न्यायिक अधिकारियों तथा अन्य सभी संबंधित स्ट्रेकहोल्डरों की क्षमता संवर्धन में सहायता करेगी।
- यह ईकाई राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों के कार्मिकों को इस क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए दीर्घावधि कार्यक्रमों को आरंभ करने में भी सहायता करेगी।

4. अनुसंधान एवं विकास यूनिट

- साइबर जगत में अश्लील तथा आपत्तिजनक विषय–वस्तु का पता लगाने के लिए प्रभावी उपकरणों का विकास करने हेतु सतत परिष्करण की आवश्यकता है। अत: राष्ट्रीय महत्व के शोध एवं शैक्षिक संस्थानों की सहभागिता से अनुसंधान एवं विकास के लिए गतिविधियों को करने की आवश्यकता है।
- इन प्रयासों से प्रौद्योगिकी को बेहतर बनाया जा सकेगा तथा उन्हें किसी भी प्रकार के साइबर अपराध से निपटने के लिए तैयार किया जा सकेगा। अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों के कार्यों में देश में उत्कृष्ट केन्द्रों (सीओई) को विकसित किया जाएगा।

5. जागरूकता संवर्धन यूनिट

भारत सरकार द्वारा सुपरिभाषित नागरिक जागरूकता कार्यक्रम की आवश्यकता है जिसका उद्देश्य सक्रिय न्यूनीकरण पहल के रूप में साइबर अपराध करने अथवा न करने योग्य बातों को बताना है।

- स्कूलों में साइबर अपराध तथा साइबर स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता को स्कूल पाठ्यक्रम के घटक के रूप में शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर आरंभ किया जाएगा।
- ये जागरूकता सम्प्रेषण वेबपोर्टल तथा मोबाइल एप के द्वारा पहुंचाएं जाएंगे। इन माध्यमों के द्वारा व्यक्ति को विभिन्न प्रकार के साइबर अपराधों के बारे में सूचित किया जाएगा तथा स्वयं को बचाने के लिए प्रौद्योगिकी का किस प्रकार सुरक्षा से प्रयोग किया जाए इसकी जानकारी दी जाएगी।
- देशभर में स्कूल, कॉलेज स्तर पर जागरूकता अभियान जैसे कि एक दिवसीय कार्यशाला, निबंध तथा भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी तथा इन कार्यक्रमों के भाग के रूप में साइबर शिष्टाचार, करने तथा करने योग्य बातों से संबंधित पुस्तिकाएं तथा पुरस्कार वितरित किए जाएंगे।
- प्रत्येक राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में साइबर फोरेंसिक प्रशिक्षण प्रयोगशालाएं लगाने तथा प्रयोगशालाओं को चलाने के लिए कनिष्ठ साइबर फोरेंसिक परामर्शदाता को रखने के लिए राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों को 87.12 करोड़ रु. की राशि जारी की गई है।
- 31.03.2020 तक 40500 पुलिस, अभियोजकों तथा न्यायिक अधिकारियों को प्रशिक्षण देने के लिए राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों को 6 करोड़ रु. की सहायता राशि जारी की गई है।
- साइबर अपराध जागरूकता पर ट्वीट करने के लिए 'साइबर दोस्त' ट्विटर हैंडल आरंभ किया गया है।
- मेघालय पुलिस के 23 पुलिस अधिकारियों के लिए एनईपीए द्वारा 2 से 6 अप्रैल, 2018 तक 'साइबर क्राइम इन्वेस्टिगेशन' पर पांच दिवसीय पाठ्यक्रम निर्धारण आयोजित किया गया था।

इस तरह अन्य माध्यमों से भी साइबर अपराध रोकथाम तथा नियंत्रण के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के लिए उत्कृष्ट केन्द्रों के संवर्धन हेतु प्रस्ताव प्राप्त हो रहे हैं।

ड्यूटी



जगदीश पाणीग्राही
उप महाप्रबंधक (आरपीसी)

डॉ. अजय अपने क्लिनिक में मरीजों के चिकित्सा में व्यस्त थे, तभी फोन की घंटी बजी। नर्स ने फोन उठाया थोड़ी बातचीत करने के पश्चात डॉ. अजय की तरफ फोन बढ़ा दिया। डॉ साहब ने हेलो बोला और फिर शांत मुद्रा में आकर केवल हाँ जी कहने लगे। दूसरी तरफ उनकी पत्नी आशा बोल रही थी।

पत्नी ने पूछा : जनाब खाना खा चुके हो क्या?

डॉ : नहीं, अभी समय नहीं हुआ।

पत्नी : जनाब दोपहर के तीन बज रहे हैं तो फिर कब खाओगे।

डॉ : घडी की तरफ देखकर बोले अरे तीन बज रहे है मुझे पता भी नहीं चला, अभी खा लूंगा, दो–तीन मरीज बाकी हैं। उनकी चिकित्सा करके फिर खाना खा लूँगा।

पत्नी : कहीं आप तो यह भी नहीं भूले की आज हमारी शादी की पहली सालगिरह है। शाम को सात बजे से कार्यक्रम शुरू होने वाला है। सब मेहमान आ जाएंगे और आप भी समय पर पहुँचना, मेरी चहेती सहेलियां भी आ रही हैं, याद रहे उनके सामने राजकुमार की तरह रहना और सहेलियों के सामने मेरी किरकिरी न करना।

डॉ : हाँ मैं समय पर आ जाऊंगा। आप निश्चिंत रहो कहकर फोन रख दिया। डॉ साहब ने नर्स से एक गुलदस्ता मंगवाने के लिए कहा और उसे भी सह–परिवार आने का न्यौता दिया।

शाम के सात बज रहे थे, सूर्य अस्त हो चूका था। क्षितिज दूर उसकी किरण धुंधली दिखायी दे रही थी, पशु, पक्षी अपने–अपने वासो की तरफ जा रहे थे, अंधकार सभी को अपने आगोश में ले रहा था, दूर मंदिर से घंटा की आवाज सुनाई दे रही थी। डॉ साहब की आंगन सजावट से भरी हुई थी और मेहमानों का इंतजार कर रही थी, बिजली के छोटे–छोटे बल्ब टीम–टीमा रहे थे जैसे भादो की रात में जुगनू। आंगन के कोने में बिजली की कम रोशनी बत्तीयाँ दुधीयाँ रोशनी आंगन में फैल रही थी, मानो चाँदनी रात लग रही थी। शहर के सभी नामी–गिरामी लोग आ चुके थे। तभी डॉ साहब ने अपनी पत्नी आशा के साथ आयोजन स्थल में प्रवेश किया। आशा देवी एक गुलाबी रेशमी साड़ी पहनी हुई और केश खुले हुए थे। गले में मोतीयों की माला चमक रही थी, बाहों में बाजूबंद, हाथों में सोने के कंगन और अंगुलियों में हीरे की अंगूठी और माथे पर हीरे जड़ीत टिकी चमक रही थी। होठों पर गुलाबी लिपस्टिक लगी हुई थी। ऐसे लग रही थी जैसे स्वर्ग से कोई परी धरती पर उतर आई हो। डॉ अजय नीला कलर का बंद गला सूट पहने थे। उपर दो गुलाब का फुल लगे हुए थे। ऐसे लग रहे थे कि मालिक ने इन दोनों को फुरसत में बनाया है।

आयोजन हॉल में अनेक बार दोनों ने मेहमानों का अभिवादन किया और देरी होने की क्षमा मांगी। वातावरण थोड़ा महक उठा, लोग आपस में मुलाकत कर रहे थे, संगीत धीमा बज रहा था खुशबू की पुहार रूक–रूक आ रही थी, दूर भोजन और मिठाई बना कर रखी हुई थी,

उसकी महक भी धीमी रूप से स्थल में फैलकर और लोगों की भुख में इजाफा कर रही थी। आंगन पूरा बिजली की रौशनी से नहाया हुआ था, दुधिया रोशनी से आंगन बिलकुल पूनम की रात लग रही थी। बिजली का तोरण पेड़ों पर ऐसा बिछाया गया था मानो भादो रात में जुगनू टीम–टीमा रहे थे। आयोजन स्थल में मधुर संगीत बज रहा था, डॉ अजय ने मेहमानों का अभिवादन किया और देरी होने के लिए क्षमा मांगी।

शहर के नामी–गिरामी लोगों को आमत्रित किया गया था। सबके आगमन के स्वागत में व्यस्त डॉ दंपति थे। फिर वह घड़ी आ गई जिसका सबको इंतजार था। डॉ दंपति ने अपने पहली सालगिरह का केक काटा और पहला टुकड़ा एक दुसरे को खिलाया, लोगों ने ताली बजाकर सालगिरह की मुबारकबाद दी। फिर नौकर को बुलाकर केक के छोटे–छोटे टुकड़े करके मेहमानों को बाटने को कहा, नौकर मेहमानों में केक, फलरस, मेवा बाटने में व्यस्त थे और डॉ दंपति मेहमानों से मिलने में व्यस्त थे, लोगों का अभिवादन स्वीकार कर रहे थे।

तभी नौकर ने आकर डॉ अजय के कान में कुछ कहा, तुरंत डॉ साहब आंगन से बाहर आकर टेलीफोन से बात करने लगे, जैसे वार्तालाप चल रहा था। डॉ अजय के चेहरे में झूरियाँ छा रही थी। फोन रखकर डॉ अजय ने नौकर को उनका स्टेथोस्कोप, दवाई बैग लाकर कार में रखने को कहा और आशा को अपने तरफ आने को कहा जो दूर खड़े टकटकी लगायी सब देख रही थी।

अजय : मुझे अभी तुरंत दूसरे गाँव जाना है, मरीज को देखना है।

आशा : कमबख्त को अभी ही बीमार होना था। उनको कह दो हम नहीं आ सकते।

अजय : मरीज की हालत नाजुक है, मुझे तुरंत जाना पड़ेगा।

आशा : तो फिर पार्टी हो जाने के बाद में चले जाना।

अजय : नहीं आशा, तुम नही समझोगी। कुछ अनर्थ हो गया तो, मैं कभी अपने आपको जीवन भर माफ नहीं कर पाऊंगा।

आशा : आग बबूला हो रही थी, अजय ने मेहमानों के बीच में हाथ जोड़कर क्षमा मांगी और उनसे आज्ञा लेकर निकल पड़े।

डॉ अजय करीब मध्य रात्री घर पहुंचे। आंगन सुनसान लग रहा था, नौकर सब बर्तन साफ कर रहे थे, मेजों को समेट रहे थे। फिर घर के अंदर गए तो देखा आशा सोफा पर बैठी सो रही थी, उपहार सब बिखरे पड़े थे। चंद लम्हों के लिए भावुक हो गये, उन्होंने अपनी शॉल अपने पत्नी के शरीर के ऊपर ओढ़ा दिया और एकटक से उसका चेहरा देख रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो गुलाब मुरझा कर सोफे पर पड़ा हो, घर में सन्नाटा था केवल पंखा चलने की आवाज आ रही थी। तभी नौकर ने एक कप कॉपी लाकर मेज पर रख दी और खाना लगाने के लिये पूछा। डॉक्टर ने खाना खाने से मना कर दिया।

कुछ काल बाद –

बरसात का मौसम था। मध्यरात्री का समय था। डॉ अजय का लाडला बेटा बुखार से तड़प रहा था। आशा अपने आँखों के दुलारे को एकटकी से देख रही थी, माथे पर गीले कपड़े को बार–बार बदल रही थी, दवाई की शिशी बगल में रखी हुई थी, आशा जी सहमी हुई थी क्योंकि गाँव भर में हैजा फैला हुआ था। डॉ अजय ने अपने बैग से इंजेक्शन निकाला बच्चे के बाहों में दे दी। बच्चा रोने लगा लेकिन आँख खुल नहीं रही थी। नन्हे को रोता देख आशा ने उसे

देखकर अपने आंचल में ले लिया, पर उसको शांत करने लगी अपने सीने से चिपकाकर, पीठ थपथपाने लगी। डॉ अजय यह सब देख रहे थे। आशा ने थोड़ी देर में नन्हे को बिस्तर में सुलाकर गीली पट्टी उसके माथे पर रख दी और शरीर का तापमान छुकर अनुमान करने लगी। तापमान कमी ही नहीं हो रहा था। फिर डॉ अजय की तरफ मूड़ी और जोर से चिल्लाने लगी। डॉ अजय का कॉलर पकड़ कर झकझोर के बोलने लगी कैसे डॉक्टर हो तुम? एक नन्हे को ठीक नहीं कर सकते, लानत हो तुम पर, तुम डॉक्टर के लायक नहीं हो, उस बच्चे के तुम एक पिता भी हो। अपने बच्चे की तडप का भी अहसास नहीं कर सकते हो और फिर जोर से एक थप्पड डॉक्टर के गाल पर जड दी। फिर फुट-फुट कर रोने लगी। मैं एक माँ हूँ, बच्चो की तडप समझ सकती। डॉ अजय उनके आँखों में चिंगारी देख रहे थे, लग रहा था साक्षात देवी चंडिका उनके सामने खड़ी है।

रो-रोकर आशा अपने कमरे से बाहर चली गई। डॉ अजय शांतचित मुद्रा में खड़े थे और नन्हे की तरफ देख रहे थे। वह किंकर्तव्य विमूढ़ थे। धीरे-धीरे रात गुजर गई और भोर होने लगा, पक्षियों का कोलाहल शुरू हो गया था। हल जोतने खेतों की तरफ जा रहे बैलों के गले की घंटी का आवाज आ रही थी। मंदिर से शंख नाद की आवाज आ रही थी। दूर क्षितिज में सूरज का ललिमा फैल रहा था।

आशा जो रात भर सोफे पर उंघ रही थी, उसने आँख खोली, तेजी से अपने नन्हे के कमरे में दौड़ी, देखा उनका नन्हा शांत सो रहा, माथे पर पसीना के बुँदे बिखरे हुए थे। मानो प्रकृति ने पूरी ओस के बूंद बच्चे के शरीर में बौछार कर दी हो। आशा ने लंबी साँस ली। देखा कमरे में सिर्फ पंखे की आवाज, झरोखा खुला हुआ था, वहां से ठंडी हवा भी आ रही थी। साथ में आंगन में खिले फूलों की महक आ रही, उनकी आँख डॉ अजय को तलाश रही थी लेकिन वो वहां नहीं थे।

डॉ. अजय दूसरे कमरे में झरोखे के बाहर ताक रहे थे, प्रात: की प्रकृती की छटा का लुप्त उठा रहे थे, तभी पीछे से कोमल हाथ उनके कंधो पर पड़ा उन्होंने पीछे मुड़ के देखा, आशा एक कप चाय के साथ खड़ी थी। अजय चाय का प्याला हाथ में लेकर आशा को देखने लगे, मानो वह कुछ कहने वाली हो। आशा कांप-कांप कर कहने लगी मुझे माफ़ कर दीजिये। रात को जो हुआ उसे भूल जाईये। डॉ अजय ने उनकी सजल आँखों को देखकर कहने लगे - आशा, मै तुम्हारी व्यथा को समझ सकता हूँ क्योंकि तुम एक 'माँ' हो।

मैं भी सालगिरह के दिन किसी माँ की व्यथा सुनकर पार्टी छोड़कर चला गया। उसका दुलारा भी बुखार से तडप रहा था। मेरी उपस्थिति पार्टी से ज्यादा वहां थी, इसके लिए मैं पार्टी छोड़कर चला गया।

आशा यही मेरी ड्यूटी, फर्ज और कर्तव्य है।



फ्रांसिस लोबो
कार्यालय अधिक्षक (एचआर एक्जीक्यूटिव)

जब सोचने भर से चलेगा मोबाईल और कंप्युटर

एलन मस्क का दावा–वर्ष 2022 में इंसानों में लगाएंगे चिप

सोचिए अगर आपको सुबह 4 बजे उठकर फ्लाइट पकड़नी है और आप अलार्म लगाना ही भूल गए लेकिन ठीक 4 बजे आपके मोबाइल का अलार्म अपने आप बजने लगे और आप जाग जाएं या फिर आपको कोई मेल बॉस को भेजना है, लेकिन आप ड्राइव कर रहे है। तो आपके ड्राइव करने के बावजूद मेल समय पर आपके बॉस तक पहूंच जाता है। किसी के भी मन में यह सवाल उठना स्वभाविक है कि ये कैसे संभव है। जो भी बात दिमाग में आ रही है, वो सब अपने आप होती जा रही है लेकिन यह कल्पनिक बात नहीं है बल्कि अगले कुछ वर्षो में होने वाले बदलाव की झलकियां है।

दरअसल इस नई तकनीक में व्यक्ति का दिमाग और उसमें लगी एक चिप एक दूसरे के साथ सीधे कनेक्ट होकर बिना कोई कमांड लिए सोचने भर से काम करना शुरू कर देंगे। एलन मस्क ने दावा किया है कि उनकी कंपनी न्यूरालिंक ने एक वर्ष से भी कम समय में इस चिप को इंसान के दिमाग में लगाने के लिए तैयार है। न्यूरालिंक ने एक ऐसा न्यूरल इंप्लांट विकसित किया है, जो बिना किसी बाहरी हार्डवेयर के दिमाग के अंदर चल रही गतिविधि को वायरलेस से प्रसारित कर सकता है। मस्क ने कहा कि न्यूरालिंक बंदरों में अच्छी तरह से काम कर रहा है और हम इससे जुड़े बहुत सारे परीक्षण कर रहे हैं। बंदरों पर हो रहे परीक्षण को देखने के बाद हम इस बात को ज़ोर देकर कह सकते है कि यह बहुत ही सुरक्षित और भरोसेमंद है।

उन्होंने बताया कि न्यूरालिंक डिवाइस को सुरक्षित रूप से हटाया जा सकता है। हमारी ये तकनीक उन लोगों के लिए वरदान साबित होगी, जो टेट्राप्लाजिक, क्वाड्रीप्लाजिक जैसी रीढ़ की हड्डी की परेशानी से जूझ रहे हैं और लंबे समय से बिस्तर पर हैं। मस्क ने कहा कि हमें उम्मीद है कि हमें अगले वर्ष एफडीए से इसके लिए मंजूरी भी मिल जाएगी। मुझे लगता है कि हमारे पास किसी ऐसे व्यक्ति को ताकत देने का मौका है, जो चल नहीं सकता है या फिर अपने हाथों से काम नहीं कर सकता है। मस्क ने बताया कि 9 अप्रैल, 2021 को, न्यूरालिंक ने एक बंदर में अपनी ब्रेन चिप लगाई थी, जिसके कारण बंदर अपने दिमाग का इस्तेमाल कर पोंग खेल आराम से खेल सका। बंदर के दिमाग में डिवाइस ने खेल खेलते समय न्यूरॉन्स फायरिंग के बारे में जानकारी दी, जिससे वह सीख पाया कि खेल के दौरान कैसे चाल चलनी है।

सिंगापुर में हिंदुस्तानी झंडा



सनेही प्रसाद
इलेक्ट्रीशियन

1914 में जब प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ा तो गदर पार्टी ने मौके का फायदा उठाने की सोची। पार्टी की स्थापना साल भर पहले ही हुई थी। जंग छिड़ने के बाद गदर पार्टी के प्रमुख नेता लाला हरदयाल को यह लगा कि अब हालात ऐसे हैं कि अंग्रेजों से भारत छीना जा सकता है। उन्होंने दुनिया के कई देशों से मदद जुटाई। उस वक्त गदर पार्टी के दूसरे नेता परमानंद अमेरिका से वापस आ रहे थे। लाला हरदयाल ने पं. परमानंद को सिंगापुर में रुककर भारतीय सैनिकों से मिलने और उन्हें देश के बारे बताने के लिए कहा। पं. परमानंद तब गदर पार्टी के बेहद ओजस्वी वक्ता माने जाते थे।

उस वक्त सिंगापुर में तीन हजार भारतीय सैनिक मौजूद थे, जिन्हें फिरंगी अपनी जंग लड़वाने के लिए लेकर गए थे। सबको खबर की गई, तीन हजार सैनिक इकट्ठा हुए और बैठक मेल-मिलाप सभा में बदल गई। पं. परमानंद बोले, 'अंग्रेजों ने सन 57 की क्रांति के बाद पटना से लेकर दिल्ली तक तुम्हारे पूर्वजों को उलटा लटकाकर मारा। उस जंग में तुम्हारे पूर्वजों के बलिदान में भारत माता को आजाद कराने की जो अभिलाषा थी, वह तुम्हारे दिल में दोगुनी-तिगुनी होकर दिखनी चाहिए। अगर तुममें तुम्हारे पूर्वजों की भावनाएं नहीं हैं, तो मैं तो यही कहूंगा कि अब तुम्हारे खून में वह शुद्धता नहीं रही। परमानंद लगभग बीस मिनट तक बोलते रहे।

उस ओजस्वी भाषण का असर यह हुआ कि तीन हजार सैनिकों की उस सभा ने वहीं बगावत का एलान कर दिया। उस दिन जगह-जगह हुई भिड़ंत में 600 गोरे सैनिक मारे गए। फिर हिंदुस्तानी सैनिकों ने सिंगापुर किले पर आजादी का पहला झंडा फहराया। इस पर भारत का नक्शा बना हुआ था। यह झंडा भारत से ही आया था। सच है कि हिंदुस्तानी अपनी आजादी के लिए सिर्फ भारत में ही नहीं लड़े हैं। उन्होंने विदेशी जमीन पर भी अपना खून बहाया है।



सुमन कुमार ठाकुर
निजी सहायक, सीएमडी

हिंदी कविता

हिंदी

पहला शब्द निकलनेवाला

जन्म के बाद बोलनेवाला

वह शब्द है हिंदी

हिंदी बोलने के बात में

क्यों समझते है अपना अपमान

विस्मृत कर तुमको जो भी गए

वो क्या विकसित हो पाएगे

जो हिंदी से मुँह मोड़ेगे

वो क्या सफल हो पाएगे

वीर शहीदों ने बढ़ाया हिंदी का मान

फिर भी कुछ लोग नहीं समझते हिंदी है सबकी शान

हिंदी वह धागा है

जो सहायक होती है समाज निर्माण में

फिर भी लोग हिंदी से करते हैं परहेज

जिनके बिना अस्तित्व है कहाँ

हिंदी हमारी वेदना

हिंदी हमारी गान है

हिंदी आत्मा है

हिंदी भावना का साज है

जो हिंदी से प्रेम करता है

उसकी हर आवाज है हिंदी

हिंदी निराला, प्रेमचंद्र की लेखनी का गान है

पंत,दिनकर का मधुर है संगीत है

हिंदी चेतना वाणी का शुभ वरदान है

ममता का आँचल है हिंदी

जो न मिटने वाला अमित पहचान है

जब तक चंदा सूरज रहे

उस क्षण तक अमर हिंदी रहे !

जय हिंद !!

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की उपलब्धियाँ

कोविड के कारण मृत कर्मचारियों कोआर्थिक सहायता

कोविड के कारण मृत कर्मचारियों को श्रद्धांजलि देने के लिए, एमडीएल ने लगभग 82 लाख रुपये की अनुग्रह राशि मृत कर्मचारियों के परिवारजनों को 01 अक्टूबर 2021 को सागरिका सभागृह, एमडीएल में वितरित की।

वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, एनएम, भानौ(नि), अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री संजीव सिंघल, निदेशक (वित्त), एमडीएल ने मृत कर्मचारियों के सदस्यों को चेक सौंपे।

कार्यक्रम के दौरान, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा निदेशक (वित्त) ने दिवंगत कर्मचारियों को श्रद्धांजलि अर्पित की, साथ ही मृतक कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों के प्रति उनके भविष्य के सभी प्रयासों में अपनी एकजुटता और सहयोग व्यक्त किया। कार्यक्रम में मृत कर्मचारियों के परिवार के सदस्य, अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण और एमडीएल के बार्गेनिंग कौंसिल के सदस्य उपस्थित थे।



माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की उपलब्धियाँ

प्रथम विशाखापट्टनम श्रेणी विध्वंसक नौसेना को सुपुर्द

माझगांव डॉक शिप बिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) ने परियोजना 15 बी श्रेणी विध्वंसक यानि यार्ड 12704 (विशाखापट्टनम) को 28.10.2021 को भारतीय नौसेना को सुपुर्द किया। स्वीकृति दस्तावेज़, एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, भानौ (नि) और रियर एडमिरल के पी अरविंदम, वीएसएम, सीएसओ (टेक) ने एमडीएल निदेशकों और नौसेना कार्मिकों की उपस्थिति में एमडीएल में हस्ताक्षर किया।

इस पोत का निर्माण स्वदेशी स्टील डीएमआर 249ए का उपयोग करके किया गया है और यह भारत में निर्मित सबसे लंबा विध्वंसक है। इसकी संपूर्ण लंबाई 164 मीटर और विस्थापन क्षमता 7500 टन है। यह पोत महत्वपूर्ण प्लेटफ़ार्म है जो विभिन्न लक्ष्यों और कार्यों को पूरा करने में सक्षम समुद्री युद्ध के पूरे स्पेक्ट्रम में फैला हुआ है। यह पोत सुपरसोनिक सरफेस टू सरफेस 'ब्रह्मोस मिसाइल तथा बराक–8 लॉन्ग रेंज सरफेस टू एयर मिसाईल' से सुसज्जित है। इस अंडर सी वारफेयर कैपेबल डिस्ट्रायर में स्वदेशी रूप से विकसित एंटी सबमरीन वेपन और सेंसर लगाए गए हैं। मुख्य रूप से हल माउंटेड सोनार हमसा एनजी, हेवी वेट टारपीडो ट्यूब लांचर्स, राकेट लांचर्स आदि।



माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की उपलब्धियाँ

चौथी स्कॉर्पिन पनडुब्बी वेला की डिलीवरी

माझगांव डॉक शिप बिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) ने 09 नवंबर 2021 को भारतीय नौसेना की परियोजना पी–75 की चौथी स्कॉर्पीन पनडुब्बी की डिलीवरी के साथ भारत सरकार की आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया पहल की अपनी गाथा जारी रखी, जिसे बाद में आईएनएस वेला के रूप में भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। स्वीकृति दस्तावेज़ पर एमडीएल के निदेशकों और नौसेना कार्मिकों की उपस्थिती में वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद , एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि), अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एमडीएल और रियर एडमिरल केपी अरविंदन, वीएसएम, चीफ स्टाफ ऑफिसर (टेक) पश्चिम नौसेना कमांड ने हस्ताक्षर किए थे।

वेला की डिलीवरी के साथ भारत एक पनडुब्बी निर्माण राष्ट्र के रूप में खंडेरी, कलवरी, करंज और अभी वेला नामक चार पनडुब्बियों की डिलीवरी ने राष्ट्र निर्माण करने वाले पनडुब्बियों के विशेष समूह में भारत की सदस्यता की पुष्टि की है।

एमडीएल द्वारा वर्ष 1992 और 1994 में निर्मित एसएसके पनडुब्बियाँ आज भी 25 वर्षों से अधिक समय तक सक्रिय सेवा में है और यह एमडीएल के निर्माण गुणवत्ता का स्पष्ट प्रमाण है। एमडीएल भारतीय नौसेना की सभी चार एसएसके श्रेणी पण्डुब्बियों के माध्यम से पुर्नसज्जा और लाइफ सर्टिफिकेशन का कार्य पूरा कर रहा है।



माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की उपलब्धियाँ

एमडीएल में सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2021

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) में 26 अक्टूबर 21 से 01 नवंबर 21 तक 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2021' मनाया गया।

वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, एनएम, भानौ(नि) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एमडीएल ने 26 अक्टूबर 21 से 01 नवंबर 2021 तक 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2021' का उद्घाटन गृहपत्रिका एमडीएल के वरिष्ठ अधिकारियों को ईमानदारी की शपथ दिलाकर किया। इन्होंने सतर्कता सुचारिता के 24 वे अंक विमोचन भी किया। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं श्री महेश चंद्रा, मुख्य सतर्कता अधिकारी ने एमडीएल के कार्मिकों को संबोधित कर "**स्वतंत्र भारत 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता**" के वर्तमान विषय पर प्रकाश डाला।

मुख्य सतर्कता अधिकारी और इनकी टीम ने सप्ताह के दौरान एमडीएल कर्मचारियों के लिए निवारक सतर्कता पर प्रशिक्षण सत्र, सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता पर स्किट ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी, निबंध लेखन, नारा लेखन और पोस्टर स्पर्धा जैसे कई कार्यकर्मों का आयोजन किया।



माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की उपलब्धियाँ

आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर एमडीएल की हेरिटेज गैलरी - 'धरोहर की प्रदर्शनी'

भारत सरकार द्वारा चल रहे 'आजादी का अमृत महोत्सव' थीम के अनुरूप, माननीय रक्षा मंत्री, श्री राजनाथ सिंह ने 75 स्थानों पर सार्वजनिक प्रदर्शनी का वर्चुअल उद्घाटन और 07 स्थानों पर क्यूरेटेड संग्रहालयों में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) की हेरिटेज गैलरी – 'धरोहर' भी शामिल है जिसका उद्घाटन दिनांक 13 दिसंबर 2021 को किया गया है। श्री अजय कुमार, सचिव (रक्षा) और रक्षा मंत्रालय, दिल्ली के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के कुशल निर्देशन में उद्घाटन समारोह को आयोजित किया गया था।

महोत्सव के भाग के रूप में 'धरोहर' को सर्वसाधारण के लिए खोला गया है और दिनांक 13 से 19 दिसंबर 2021 तक एमडीएल द्वारा निर्मित मार्की रक्षा प्लेटफॉर्मों को प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था।

श्रीमती किशोरीताई पेडणेकर, मेयर मुंबई, महानगरपालिका, समारोह की विशिष्ट अतिथि थी। वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, एनएम, भानौ(नि) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कमांडर जसबीर सिंह, भानौ (नि, निदेशक (पनडुब्बी एवं भारी अभियांत्रिकी), श्री संजीव सिंघल, निदेशक (वित्त), श्री बीजू जार्ज, निदेशक (जहाज निर्माण), श्री महेश चन्द्र, सीवीओ और एमडीएल के अन्य अधिकारीगण भी वर्चुअल उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे।



माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की उपलब्धियाँ

पी15बी के दुसरे विध्वसंक मोरमुगाओ पोत का समुद्री परीक्षण

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) ने गोवा मुक्ति संग्राम के नायकों को बेहद अनोखे तरीके से श्रद्धांजलि दी।

मोरमुगाओ, पी15बी के दूसरे विध्वसंक पोत एमडीएल में निर्माणाधीन विशाखापट्टनम क्लास डिस्ट्रोयर्स ने 19 दिसंबर 2021 को पुर्तगालियों से गोवा मुक्ति दिवस की हीरक जयंती के अवसर पर समुद्री परीक्षण किया। एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, भानौ (नि) ने कहा कि मूल रूप से जहाज के परीक्षण का चरण अगले साल की शुरुआत में शुरू होना था, शिपयार्ड ने महात्मा गांधीजी द्वारा कहे गए विचार 'कर्म ही पूजा है' के मार्ग पर चलने के लिए चुना और 19 दिसंबर 2021 को जहाज को तैरने के लिए अनुकूल बनाने के लिए सभी आवश्यक कार्य पूरे किए। यह एमडीएल के कार्यबल द्वारा प्रदर्शित समर्पण और जुनून के कारण संभव हो पाया है, जिसमें संबन्धित मानको से समझौता किए बिना सीमित समय सीमा में विभिन्न आवश्यक गतिविधियों को सावधानीपूर्वक बनाने और क्रियान्वित किया गया।

यह जहाज महत्वपूर्ण अत्याधुनिक स्वदेशी तकनीकों को एकीकृत करता है और आत्मनिर्भर और मेक इन इंडिया के लिए प्रोत्साहन का एक शक्तिशाली प्रतीक है।



माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की उपलब्धियाँ

डिजिटल इंडिया की प्रमुख पहल

भारत सरकार के द्वारा शुरू की गई प्रमुख पहल डिजिटल इंडिया के रूप में, माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) ने आज कर्मचारियों के हित में चार आईटी आधारित एप्लीकेशन शुरू की है। मानव संसाधन, वित्त और सीआईटी टीम ने एचआर एवं आईटी द्वारा सयुंक्त रूप से विकसित किए गए एप्लीकेशन को 03 जनवरी 2022 को सागरीका सभागार में एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, एनएम भानौ (नि), निदेशकगण , मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं एमडीएल कर्मचारियों की उपस्थिति में शुभारंभ किया गया।

I) **एमडीएल वेबसाइट पर कर्मचारी पोर्टल:** इस एप्लीकेशन को एमडीएल वेबसाइट पर, विकसित किया गया है जिसमें कर्मचारी अपने व्यक्तिगत डाटा और कागजात जैसे वेतन पत्रक, पीएफ स्लिप, कंट्रीब्यूटरी पेंशन विवरण, छुट्टी जमा, प्रक्रिया / मैनुअल और अद्यतन डिजिटल परिपत्र जैसे विवरणों का उपयोग कर सकते हैं।

ii) **ई-लाइब्रेरी:** एप्लीकेशन को कर्मचारियों के लिए एमडीएल इंट्रानेट पोर्टल पर विकसित किया गया है। यह एमडीसी के साथ-साथ कर्मचारियों को भी पुस्तक, जर्नल्स पत्रिका और लेख को अपलोड करने की अनुमति देगा।

iii) **मानव संसाधन क्योरी हैंडलिंग:** यह एप्लीकेशन एमडीएल इंट्रानेट पोर्टल पर अधिकारियों और कर्मचारियों दोनों के लिए विकसित की गई है। वर्तमान में कर्मचारी दोपहर के भोजन के दौरान अपने मानव संसाधन से संबधित कार्यों को दैनिक आधार पर समाधान निकालने के लिए मानव संसाधन विभाग में जाते हैं। यह एप्लीकेशन दैनिक आधार पर मानव संसाधन विभाग में जाने वाले कर्मचारियों की भीड़ को काफी हद तक कम कर देगा।

iv) **वार्षिक प्रॉपर्टी रिटर्न:** यह एप्लीकेशन एमडीएल इंट्रानेट पोर्टल पर अधिकारियों के लिए विकसित की गई है। यह अधिकारियों को प्रत्येक वर्ष जनवरी में ऑनलाइन डिजिटल रूप में समय पर अपनी प्रॉपर्टी रिटर्न दाखिल करने की अनुमति देगा। यह एप्लीकेशन मानव संसाधन विभाग को अधिकारियों की वार्षिक प्रॉपर्टी रिटर्न के संबंध में जांच और रिपोर्ट करने में भी सहायता करेगा।



माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की उपलब्धियाँ

कामा एवं अल्बलेस अस्पताल में उच्च निर्भरता इकाई (एचडीयू) और एनआईसीयू की स्थापना

एमडीएल ने अपनी सीएसआर पहल की तहत वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान कोविड–19 महामारी से लड़ने के लिए कामा एवं अल्बलेस अस्पताल को 1.32 करोड़ रुपये की राशि के आवश्यक चिकित्सा उपकरण और सहायक उपकरण प्रदान करके उच्च निर्भरता इकाई (एचडीयू) और एनआईसीयू की स्थापना करने में सहयोग किया।

एमडीएल ने वित्तीय वर्ष 2021-22 में महामारी के दौरान ऑक्सीजन की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए कोविड–19 वार्ड के लिए 63.13 लाख रुपये की राशि के 13 केएल लिक्विड मेडिकल ऑक्सीजन (एलएमओ) टैंक की स्थापना में कामा अस्पताल को भी सहयोग किया है।

एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि) ने 31 जनवरी, 2022 को कामा एवं एल्बलेस अस्पताल, मुंबई के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. तुषार तात्याबा पालवे को एचडीयू और 13 केएल ऑक्सीजन टैंक सौंपा गया है। डॉ. तुषार तात्याबा पालवे ने 13 केएल ऑक्सीजन टैंक और एचडीयू की स्थापना में एमडीएल के सहयोग एवं प्रयास की सराहना की है।



माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियाँ



विशाखापत्तनम की कमीशनिग करते हुए माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह के साथ नौसेना के वरिष्ठ अधिकारी एवं एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद।



एमडीएल में सेवानिवृत्त समारोह में वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, डॉ संतोष कुमार मल्लिक, कानि, (मा.सं.) के साथ उपस्थित कर्मचारी





आईएनएस वेला को नौसेना को कमीशनिग करते हुए एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद और नौसेना के वरिष्ठ अधिकारीगण।





सीएसआर योजना के अंतर्गत एमडीएल की ओर से वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, भानौ (नि), सीएमडी द्वारा कामा एवं अल्बलेस अस्पताल में ऑक्सिजन प्लांट एवं हाई डिपेंडेंसी यूनिट (एचडीयू) की प्रतिस्थापना करते हूए

माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियाँ



एमडीएल में सेवानिवृत्त समारोह में सेवानिवृत्त हो रहे अधिकारीगण के साथ वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, भानौ (नि) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



गणतंत्र दिवस समरोह में राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, भानौ (नि) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



26 जनवरी 2022 को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर अग्रनि संबोधित करते हुए।



आज़ादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य पर माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह संबोधित करते हुए।



मुंबई महापौर श्रीमती किशोरी पेडणेकर आज़ादी का अमृत महोत्सव प्रदर्शनी का उदघाटन करते हुए।



महापौर श्रीमती किशोरी पेडणेकर एमडीएल की हैरिटेज गैलरी का अवलोकन करते हुए।



वर्ल्ड एचआरडी कॉंग्रेस, मुंबई द्वारा एमडीएल को ''कोविड–19 के लिए सर्वश्रेष्ठ राहत पैकेज का कॉर्पोरेट सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी (सीएसआर) में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार



मुंबई, नंदुरबार और महाराष्ट्र के अन्य भागों में एमडीएल द्वारा कोविड–19 राहत के लिए सीएसआर परियोजना का नेशनल अवार्ड्स फॉर एक्सेलेंस इन कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी का पुरस्कार



एमडीएल को वर्ष 2019-20 में मानव संसाधन प्रबंधन श्रेणी में 11 वां पीएसई का उत्कृष्टता पुरस्कार

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड



पनडुब्बी वेला



मोरमुगाओ पोत

राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता